ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

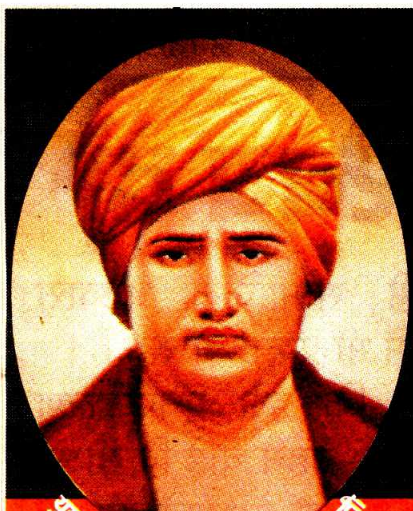

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 9 अंक 53 | 9 से 15 जनवरी, 2014 | दयानन्दाब्द 190 | सृष्टि सम्वत् 1960853114 | सम्वत् 2070 | पौ. शु.-9

आओ! मिलकर इन्सानियत की मशाल जलायें

— स्वामी अग्निवेश

कितने शर्म की बात है कि जिस मुजफ्फरनगर के अमन, साम्प्रदायिक सद्भाव एवं भाईचारे की मिसालें भारत में ही नहीं अपितु सारी दुनिया में दी जाती थी। जहाँ हिन्दू एवं मुसलमान भाई–भाई की तरह शताब्दियों से साथ मिलकर, एक दूसरे के सुख दु:ख को बाँटते आये थे। जहाँ अशफाक़उल्लाह खांन एवं राम प्रसाद बिस्मिल की सांझी शहादत एवं सांझी विरासत के क्रांतिकारी गीत घर–घर में गाये जाते थे। जहाँ के लोगों की खास पहचान हिन्दू–मुस्लिम की न होकर देशभक्त किसान मज़दूर की होती थी और पूरे उत्तर भारत के अन्नदाता के रूप में जाने जाते थे।

आज उसी पश्चिमी उत्तर प्रदेश की और खासकर इसी ऐतिहासिक मुजफ्फरनगर की ऐतिहासिक एवं पावन धरती पर भाईयों ने अपने ही भाईयों का कत्लेआम किया और अपनी माताओं बहनों की इज्जत एवं अस्मिता को तार–तार किया। उत्तर प्रदेश की यह ऐतिहासिक धरती अपने ही बेटे एवं बेटियों के लहू से रक्त रंजित होकर आज कराह रही है–हमें लिखते हुए शर्म आ रही है आपको पढ़ते हुए शर्म आ रही होगी।

आज हमारे सामने यही चुनौती है कि कितनी जल्दी हम और आप सभी मिलकर, दिलों को जोड़कर, हाथों में इन्सानियत की मशाल थामकर इस शर्म को एक ताकत में बदलें तथा भाईचारा, अमन और मोहब्बत की बेदारी पैदा करें। अब वह समय आ गया है कि हम सब लोग मिलकर अपने उन घोर अपराधों का पश्चाताप करें जो हमने किसी पैशाचिक एवं बांटने वाली सियासी दाव पेंचों में फँसकर अपने ही भाई बहनों के खिलाफ किये थें।

आईये! हम सब लोग मिलकर मज़हबी तास्सुव और बहशीपन के खिलाफ एक यात्रा के माध्यम से समाज की ताकत जगाने का आगाज करें– <u>आर्य समाज मुजफ्फरनगर से दिल्ली के महात्मा गाँधी की समाधि राजघाट तक। यह यात्रा 27 जनवरी से प्रारम्भ होगी और इसमें भारत के सभी मत मतान्तरों के प्रबुद्ध जन हिस्सा लेंगे। यह यात्रा दंगा एवं हिंसा प्रभावित हर क्षेत्र से गुजरते हुए महात्मा गाँधी के बलिदान दिवस 30 जनवरी को नई दिल्ली स्थित उनकी पावन समाधि तक जाकर एक राष्ट्रीय संकल्प के साथ सम्पन्न होगी।</u> आईये! हम सब मिलकर फिर से इस क्षेत्र को उसी साम्प्रदायिक सद्भाव तक पहुँचायें जिसके लिए यह क्षेत्र हमेशा जाना जाता है आईये! फिर से हम सब मिलकर हिन्दू या मुसलमान नहीं बल्कि सिर्फ किसान बन जायें, अच्छे इन्सान बन जायें।

आशा है कि आप सब लोग तन मन धन से इस यात्रा में सहयोग देंगे और आगे बढ़कर पूरे 4 दिन अथवा जितना भी समय संभव हो, मिलकर यात्रा करेंगे। अपराधियों को देश के कानून के तहत सबक सिखाना और सुधारना सरकार का काम है–इसमें उन्हें निष्पक्ष रहना होगा। हमारा काम होगा–गले मिलना और गिले शिकवे दूर कर इन्सानी रिश्तों को मजबूती से जोड़ना।

अगले पृष्ठ पर जारी है

आवश्यक अपील

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की 14 अप्रैल, 2013 की आवश्यक बैठक में सार्वदेशिक सभा के विधिवत संचालन के लिए एक प्रबन्ध समिति के गठन का प्रस्ताव सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने प्रस्तुत किया था जिसे सर्वसम्मति से सदन की स्वीकृति प्राप्त हो गई थी। इस प्रस्ताव में सभा मंत्री जी ने कहा था कि इस प्रबन्ध समिति के माध्यम से जहाँ सार्वदेशिक सभा की स्थिति सुदृढ़ होगी वहीं सभा को कर्मठ कार्यकर्ता भी प्राप्त होंगे। इस प्रस्ताव में कहा गया था कि महिलाओं सहित आर्य समाज एवं समाज के सभी वर्गों के प्रतिष्ठित, कर्मठ, सशक्त तथा दानवीर व्यक्ति इस प्रबन्ध समिति के सदस्य बन सकते हैं। प्रस्ताव के अनुसार प्रत्येक सदस्य को 10,000/- रुपये सदस्यता शुल्क के रूप में देना अनिवार्य होगा।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने सार्वदेशिक सभा के कार्यों को गति प्रदान करने तथा अन्य सदस्यों को सम्मिलित करने हेतु प्रसिद्ध समाजसेवी, दानवीर एवं आर्य नेता पं. माया प्रकाश जी त्यागी को सार्वदेशिक सभा प्रबन्ध समिति का महामन्त्री मनोनीत किया है।

मेरा उन सभी आर्य महानुभावों से निवेदन है कि जो आर्य समाज के सिद्धान्तों से सहमत हैं तथा आर्य समाज को आगे बढ़ाने में अपना योगदान प्रदान करना चाहते हैं, वे अविलम्ब 10,000/- रुपये सदस्यता राशि भेजकर प्रबन्ध समिति के सदस्य बनें तथा सभा के कार्यों को संचालित करने में अपना योगदान प्रदान करें। सदस्यता राशि सार्वदेशिक सभा के मुख्य कार्यालय "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर चैक/ड्राफ्ट अथवा नकद जमा करा सकते हैं। जो महानुभाव सीधे बैंक में जमा कराना चाहें तो सभा का बैंक खाता संख्या-600110100005689, बैंक ऑफ इण्डिया, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 में जमा करा सकते हैं, जिसका IFSC Code- BKID0006001 है।

प्रो. विट्ठलराव आर्य, सभामन्त्री

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आर्यों! आगे बढ़कर आर्यत्व का परिचय दो

वैदिक विचारधारा में ''हिन्दू भव'' या ''मुस्लिम भव'' आदि की कोई गुंजाइश नहीं हैं। वेदों में ''मनुर्भव'' ''मनुष्य बनो'' का आह्वान् है। हिन्दू या मुसलमान के बदले अच्छे इन्सान बनने का आह्वान् है। आज हम वेदों के रास्ते से पूरी तरह भटक गये हैं। श्रेष्ठ मानव (आर्य) बनने के बदले हम हिन्दू और जन्मना जातिवाद के अनुसार जाट, अहीर, गूजर, बनिया, ब्राह्मण आदि बन रहे है। मुसलमानों में जातिवाद का कहर है। शिया और सुन्नी के अलावा शेख, सैय्यद (ऊँची जाति) और नाई, धोबी, तेली, मेहतर (नीची जाति) में बंट रहे हैं। यही सामाजिक बंटवारा अमीर–गरीब के आर्थिक बंटवारे में भी प्रकट हो रहा है।

आर्य समाज को गर्व है कि इस पुनर्जागरण आंदोलन से जुड़े हजारों लाखों भाई–बहन चाहे किसी भी जातिवादी परिवार में क्यों न पैदा हुए हों वे अपने नाम के साथ आर्य लिखते हैं और मानवतावादी सोच को ही आगे रखते हैं। आज जब गंदी राजनीति की वज़ह से जातिवादी और साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण कुछ ज्यादा हो रहा है और मुज़फ्फनगर की हाल की हिंसक घटनाओं से मानवता शर्मसार हो रही है–तो ऐसे समय में वेद के मनुर्भव और मानवतावादी सोच को आगे लाने की ज्यादा जरूरत है। देशभर की आर्यसमाजों से तथा महर्षि दयानन्द से प्रेरित सभी शिक्षण संस्थाओं यथा डी.ए.वी. तथा आर्य विद्यालय, आदि से जुड़े सभी आर्य युवा मुजफ्फरनगर के दंगा पीड़ितों के प्रति मानवीय संवेदना लेकर जायें– हो सके तो दो चार दिन उनके साथ बितायें और जिस किसी ने भी हत्या अथवा बलात्कार जैसे अपराध किये हैं उनके साथ संवाद स्थापित कर उन्हें हार्दिक पश्चाताप के लिए प्रेरित करें। उसी तरह दंगा पीड़ितों के दिलों में भी जो स्वाभाविक गुस्सा और बदले की भावना हो उसे शान्त करने की तथा क्षमा भावना जगाने का काम हो।

अन्ततोगत्वा इन सभी झंझावतों का मुकाबला और सियासी सांम्प्रदायिकता से लड़ने के लिए हमें वैदिक मानवतावाद का झंडा उठाना होगा–फिरकापरस्ती और खौफ का अंधेरा मिटाने के लिए इन्सानियत की मशाल जलानी होगी।

कर्नाटक से चलकर हमारे साथी स्वामी वेदात्मवेश जी पिछले 20 दिनों से स्थानीय पूर्व विधायक श्री प्रदीप बालियान और नूर मोहम्मद जी आदि के साथ मिलकर दंगा पीड़ितों में लगातार जा रहे हैं और दंगे के घावों पर मरहम लगा रहे हैं। मदरसों में प्रवचन कर रहे हैं और सबको साथ लेकर हवन की सुगन्धि भी फैला रहे हैं।

मुजफ्फरनगर तथा शामली में आर्यसमाज का विशाल प्रांगण है– ठहरने की भी समुचित व्यवस्था की जा सकती है। आप भी मानवता का मिशन लेकर उधर जाना चाहें तो स्वागत है।

सम्पर्क करें :–देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान–आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश (09412678571), ओमपाल जी (09997931125), विवेक मलिक (**09557777750**)

– स्वामी अग्निवेश, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2

यात्रा की रूपरेखा

27 जनवरी, 2014 प्रातः 10 बजे (मीनाक्षी सिनेमा के सामने) आर्यसमाज रोड, आर्यसमाज मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश से लगभग 25 गाड़ियों का काफिला (एक जनसभा के बाद) शुरू होगा।

रूट एवं जनसभाएँ

27.01.2014
मुजफ्फरनगर–फक्करशाहचौक–तावली–शाहपुर–काकड़ा
28.01.2014
काकड़ा से बुढ़ाना–जौला–लोई–जोगिया खेड़ा–काँधला
29.01.2014
काँधला से बड़ौत–बागपत–लोनी
30.01.2014
लोनी से राजघाट प्रातः 11 बजे से 1 बजे विशाल संकल्प सभा

निवेदक

स्वामी अग्निवेश
प्रधान–सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा

सरदार वी. एम सिंह
प्रधान–राष्ट्रीय किसान मज़दूर

हरिओम पंवार
(विश्वविख्यात क्रान्तिकारी कवि)

हिमान्शु कुमार
(विख्यात सामाजिक कार्यकर्ता)

पं. मायाप्रकाश त्यागी
महामंत्री–प्रबंध समिति
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान–आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

प्रदीप बालियान
पूर्व विधायक

पं. विष्णु शर्मा
सनातन धर्म के विद्वान

काज़ी मो. ज़हीर आलम
शहर काज़ी मुजफ्फरनगर

पुष्पा शास्त्री
आर्य वीरांगना एवं भजन उपदेशिका

संयोजक

मो. मूसा कासमी (9917084176)
मनु सिंह (9911089216)
होती लाल (09219185842)
डा० विवेक मलिक (09557777750)
स्वामी वेदात्मवेश (09535047378)
विकास बालियान (09412113453)
कलीम त्यागी (09897632786)
मणिमाला रावत (09411039188)
नीलम भारद्वाज (08126859710)
प्रधान नूर मोहम्मद (09412665405)
प्रधान मुसराज (09760312350)
शहजाद प्रधान (09359553456)
ओमपाल आर्य (09997931125)

www.thearyasamaj.org

मानव तस्करी के जख्म

– मनोज राय

यह जानकारी ही त्रासद है कि भारत में इंसानी जीवन तस्करी का शिकार है। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र संघ औषधि और अपराध नियंत्रण कार्यालय (यूएनएओडीसी) ने मानव तस्करी से सम्बन्धित जो रिपोर्ट जारी की है, उससे पता चलता है कि देश में बड़े पैमाने पर महिलाओं और बच्चों की तस्करी हो रही है। सरकारी और प्रशासनिक लापरवाही की वजह से देश में चल रहे इस घिनौने खेल को उजागर करने वाली इस रिपोर्ट में बताया गया है कि महिलाओं की तस्करी सिर्फ देह व्यापार के लिए ही नहीं हो रही, बल्कि उनका इस्तेमाल और भी कई कार्यों के लिए हो रहा है। बच्चों की तस्करी के बारे में भी कहानी कुछ ऐसी ही है।

संस्था की रिपोर्ट बताती है कि गरीब परिवारों के बच्चों की खरीद-फरोख्त बड़े शहरों में इसलिए तेजी से बढ़ रही है ताकि उनसे घरेलू नौकरों के तौर पर काम लिया जा सके। कई परिस्थितियों में बिचौलिए बच्चों के अभिभावकों को इस बात का झांसा देकर आते हैं कि उन्हें अच्छा रोजगार दिलायेंगे। लेकिन ऐसे मामलों में होता यह है कि रोजगार तो मिलता नहीं बल्कि जिस बच्चे या महिला को इस तरह लाया जाता है कि वह खुद शोषण के दुश्चक्र में फंसकर रह जाते हैं। ऐसे बच्चे और महिलाएं अक्सर शारीरिक शोषण के शिकार होते हैं।

रिपोर्ट कहती है कि 2011-12 में भारत में कुल 1.26 लाख बच्चों के खरीद-फरोख्त के मामले दर्ज हुए। ऐसे मामलों में चोटी पर देश का सबसे अधिक आबादी वाला राज्य उत्तर प्रदेश है। इस सूबे में कुल 29,947 ऐसे मामले दर्ज किए गए। दूसरे नंबर पर बिहार रहा। 'सुशासन' का राग अलापने वाले बिहार में बच्चों के खरीद-फरोख्त के कुल 19,673 मामले दर्ज किए गए। राष्ट्रीय बाल आयोग ने अपनी जांच में यह बताया कि मानव तस्करी के शिकार बच्चों से कोयला के खदानों में भी काम कराया जाता है। ऐसे मामलों में होता यह है कि प्लेसमेंट एजेंसी की आड़ में तस्करी का धंधा चलाने वाले बिचौलिये गरीब परिवारों को यह झूठा आवश्वासन देते हैं कि वे उनके बच्चे को अच्छा रोजगार दिलायेंगे। इसके बाद वे उस बच्चे को ले जाकर कोयला खदान के मालिकों या ठेकेदारों के हाथों 30 से 40 हजार रुपये में बेच देते हैं।

फिर इन बच्चों से जमकर काम लिया जाता है। न तो इनकी सुरक्षा का ख्याल रखा जाता है और न ही इनकी सेहत का। कोयला खदान में काम करते समय अगर कोई बच्चा घायल होता है तो उसके प्राथमिक उपचार तक की सुविधा उपलब्ध नहीं होती।

बच्चों की तस्करी सिर्फ कोयला खदानों में काम कराने के मकसद से नहीं हो रही बल्कि उन्हें और भी कई कामों में लगाया जा रहा है। झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा और असम जैसे राज्यों से बच्चों की तस्करी बड़े पैमाने पर इसलिए हो रही है ताकि बड़े शहरों में उनसे घरेलू मजदूर के तौर पर काम कराया जा सके। घरेलू मजदूर के तौर पर काम करने वाले बच्चों को कई तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। इनके लिए न तो काम के घंटे तय होते हैं और न ही इन्हें वे सुविधाएं मिलती हैं जिनका हकदार एक आम कामकाजी आदमी होता है। न तो इन्हें कोई छुट्टी मिलती है और न ही आराम के लिए अनिवार्य वक्त। घरेलू मजदूर के तौर पर काम कर रहे बच्चों का मालिकाना हक उन प्लेसमेंट एजेंसियों के पास होता है जो इन्हें तस्करों से 30 से 40 हजार रुपये में खरीदते हैं। ऐसे बच्चों के यौन शोषण का खतरा भी बढ़ जाता है।

अध्ययन में बताया गया है कि देश की राजधानी दिल्ली मानव तस्करी की भी 'राजधानी' बन गई है। दिल्ली, मानव तस्करी के सबसे बड़ी मंडी के रूप में उभरी है। आज यहां न सिर्फ भारत के अलग-अलग हिस्सों से तस्करी करके लाए गए बच्चों और महिलाओं की खरीद-फरोख्त होती है बल्कि नेपाल और बांग्लादेश से लाए गए बच्चों और महिलाओं को भी खरीदा और बेचा जा रहा हैं तस्करी करके लाए गए बच्चों और महिलाओं का बड़े पैमाने पर देह व्यापार में इस्तेमाल हो रहा है। ब्यूटी पार्लर से लेकर मसाज पार्लर और फ्रेंडशिप क्लब तक की आड़ में तस्करी करके लाई गई महिलाओं और बच्चों से देह व्यापार कराया जा रहा है। रिर्पोट में यह भी कहा गया है कि मानव तस्करी और इससे सम्बन्धित अन्य धंधे सिर्फ राष्ट्रीय राजधानी में ही नहीं चल रहे बल्कि अब इनका जाल आस-पास के शहरों में भी फैल गया है।

मानव तस्करी का पूरा तंत्र आज इस कदर संगठित हो गया है कि जिन लड़कियों का अपहरण दिल्ली से हो रहा है उन्हें मुम्बई से लेकर मध्य पूर्व के देशों तक भेजने का बंदोबस्त बेहद आसानी से कर लिया जा रहा है। कम उम्र की जिन लड़कियों का अपहरण

शेष पृष्ठ 9 पर

आगे की राह

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में सिर्फ मानव तस्करी जैसी समस्या की भयावहता को रेखांकित नहीं किया गया है, बल्कि इससे निपटने के रास्ते भी सुझाए गए हैं। इसमें सबसे पहली बात यह है कि मानव तस्करी रोकने के लिए जो कार्ययोजना 1998 में बनाई गई थी उसकी समीक्षा की जाए और इसके बाद जो कार्ययोजना बने उसके आधार पर प्रत्येक राज्य अलग से अपनी कार्ययोजना तैयार करें। मानव तस्करी को रोकने के लिए जो केन्द्रीय सलाहकार समिति बनाई गई है, उसकी बैठक नियमित तौर पर हो। इसके अलावा राज्य स्तर पर जो सलाहकार समिति बनाई गई है, उसकी बैठक भी नियमित तौर पर हो, यह पक्का किया जाना चाहिए।

मानव तस्करी को रोकने के लिए इस रिपोर्ट में इस बात की भी वकालत की गई है कि न सिर्फ सरकारी एजेंसियों में आपसी समन्वय बढ़े बल्कि पुलिस, गैरसरकारी संगठनों के साथ भी मिलकर काम करे। क्योंकि कई गैर सरकारी संगठन ऐसे हैं जो बच्चों और महिलाओं की बेहतरी के लिए काम कर रहे हैं और कई बार इनके पास ऐसी सूचनाएं होती हैं जिनके आधार पर पुलिस मानव तस्करी को रोक सकती है।

इस समस्या से निपटने के लिए जो सुझाव इस रिपोर्ट में दिए गए हैं, उनमें से एक प्रमुख सुझाव यह है कि मानव तस्करी से सम्बन्धित मामलों के निपटान के लिए फास्ट ट्रैक अदालतें बनाई जाएं। अगर ऐसा होता है और मानव तस्करी के गुनहगारों को त्वरित सजा मिलती है तो इससे एक उदाहरण पेश होगा और जाहिर है कि इससे मानव तस्करी के मामलों में कमी आयेगी। एक प्रमुख सुझाव यह भी है कि इससे मानव तस्करी की जाल से मुक्त कराए जाने वाले बच्चों और महिलाओं के पुनर्वास नीति को राष्ट्रीय दक्षता विकास कार्यक्रम से जोड़ा जाए। उम्मीद की जानी चाहिए कि हमारे देश के नीति नियंता इस समस्या की गंभीरता को समझेंगे और इन सुझावों पर गौर करके मानव तस्करी रोकने के लिए न सिर्फ ठोस नीति बनायेंगे बल्कि इनका प्रभावी क्रियान्वयन भी तय करेंगे।

– प्रस्तुति-मनोज

www.thearyasamaj.org

लुप्त होता राजधर्म

- जी. एन. वाजपेयी

पृथ्वी पर समाज का विकास शासन के इतिहास के साथ जुड़ा हुआ है। आदिम अवस्था से कबीलों द्वारा सत्तात्मक और अधिसत्तात्मक शासन से होता हुआ यह लोकतांत्रिक व्यवस्था तक पहुँचा है, जिसमें जनता अपने प्रतिनिधि चुनती है और वे शासन करते हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था में निहित दर्शन है - जनता के द्वारा, जनता का और जनता के लिए शासन। वास्तव में एक लोकतंत्र में राजनीति का धर्म है अधिक से अधिक लोगों का अधिक से अधिक कल्याण। आधुनिक इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है, जहाँ राजनेताओं ने हर कीमत पर लोगों के कल्याण के इस धर्म का पालन किया है। देश का नेतृत्व करने वाले ऐसे नेता, जिनका राजनीति में आने का एकमात्र उद्देश्य लोगों की सेवा करना है, महान राष्ट्राध्यक्ष कहलाते हैं। अफसोस की बात है कि ऐसे शासनाध्यक्षों का वर्ग तेजी से विलुप्त हो रहा है। आज अधिकांश राजनेता निहित स्वार्थों की पूर्ति में लिप्त हैं। उनका समाज कल्याण से कोई सरोकार नहीं रह गया है। राजनीति एक बड़ा उद्योग बन गई है और राजनेता उद्यमी। चुनाव जीतने में करोड़ों रुपये लगाये जाते हैं और जीतने के बाद इसका कई गुना वसूला जाता है। जाहिर है, इसके लिए तमाम लोकतांत्रिक मूल्यों को ताक पर रखकर भ्रष्टाचार को गले लगाया जाता है।

शासन की अधिसत्ता का लोगों पर नियंत्रण अपरिहार्य है, चाहे उनकी नियति जो भी हो। सत्ता राजनेताओं को शासन की प्रक्रिया बदलने की शक्ति प्रदान करती है। फिर चाहे जन-कल्याण पर इसका जो भी प्रभाव पड़े। नेतृत्व को शक्ति इसलिए दी गई है कि वह लोगों के बीच उभरते हुए रुझानों, उनकी जरूरतों और आकांक्षाओं के अनुरूप आधुनिकता की प्रक्रिया को तेज करें। बदलाव की प्रक्रिया प्रासंगिक होनी चाहिए और अधिक से अधिक लोगों के हित में होनी चाहिए। दुर्भाग्य से वर्तमान राजनीति इस सिद्धान्त पर चल रही है कि सत्ता भ्रष्ट करती है और निरंकुश सत्ता पूरी तरह भ्रष्ट कर देती है। सत्ता और शक्ति से लैस लोग बदलाव की प्रक्रिया को लालच और लोभ की दिशा में ले जाते हैं और यह प्रक्रिया राजनीति के धर्म से विमुख हो जाती है। सत्ता में रहने की उनकी प्रेरणा रुतबा हासिल करना और तरह-तरह से पैसा कमाना रह जाती है। इसके लिए वे भ्रष्टाचार के लिए भी हरदम तैयार रहते हैं। इस प्रकार का सैद्धांतिक भ्रष्टाचार राजनेताओं को अल्पकालिक लाभ के लिए उत्साहित करता है। वास्तव में सोशल इंजीनियरिंग की नई अवधारणा कुछ देशों में नए-नए रूपों में सामने आई है। भारत इसका ज्वलंत उदाहरण है। यहां जाति, समुदाय, धर्म आदि के नाम पर समाज को विखंडित किया जा रहा है। इसके लिए राजनेता चालबाजियों, नारेबाजियों और छल-कपट से समर्थन जुटाते हैं। वे शासन की प्रक्रियाओं को तोड़-मरोड़ कर व्यक्तिगत लाभ उठाते हैं। यह प्रवृत्ति विकासशील समाजों में ही नहीं, बल्कि यूरोप, अमेरिका और जापान जैसे विकसित समाजों में भी विद्यमान हैं।

राजनीतिक पार्टियाँ राजनीति के धर्म यानी जनता के कल्याण का पालन करने में यकीन नहीं रखतीं। इसके बजाय राजनेताओं ने अपना नया धर्म गढ़ लिया है - किसी भी कीमत पर खुद की तरक्की। खुद की उन्नति में किसी भी तरीके से पैसा कमाना, बाहुबल जुटाना और सत्ता में बने रहना शामिल है और निजी लाभ अर्जित करने के अपने इस एजेंडे में वे अपनी अगली पीढ़ी को भी हिस्सेदार बना रहे हैं। दुर्भाग्य यह है कि परिवारवाद की यह प्रवृत्ति केवल राजनेताओं के अपने परिवार तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसका अन्य नाते-रिश्तेदारों तक विस्तार हो चुका है। कुल मिलाकर इस राजनीतिक अधर्म में लोकतांत्रिक व्यवस्था के ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करने के खतरनाक संकेत मिलते हैं।

वैश्विक वित्तीय मंदी आर्थिक आपदा लेकर आई है। इसका अधिक असर विकसित अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ा है, जहां जीडीपी और प्रति व्यक्ति जीडीपी तेजी से गिर रही है। इसका असर पूरी दुनिया पर पड़ रहा है और यह अशांति का कारण बन रहा है। मिस्र और स्पेन जैसे कुछ देशों में आधी आबादी बेरोज़गार है। भारत जैसी उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में आसमान छूती मंहगाई और राजकोषीय व चालू खाते के घाटे ने हालात और भी बदतर बना दिए हैं। इन देशों में विकास का इंजन पटरी से उतर चुका है। करोड़ों नौजवान दम साधे काम का इंतजार कर रहे हैं, जबकि राजसत्ता टालमटोल पर आमादा हैं। आम आदमी का कल्याण खतरे में है। लोकतांत्रिक राजनीति का धर्म हर राजनेता और खासतौर पर विधायिका के अंगों को इस प्रकार अभिप्रेरित करना होना चाहिए कि अपने राजनीतिक दर्शन को किनारे कर वे जल्द से जल्द इस प्रकार के कदम उठाएं ताकि आर्थिक विपत्ति का चक्र सीधा घूमने लगे। इससे लोग समृद्ध होंगे और खुशहाली बढ़ेगी। दुर्भाग्य से संकीर्ण विचारधारा वाले लोगों के हितों को प्रोत्साहित किया जा रहा है या कहें ऐसे लोगों को अधिकार और सत्ता की शक्ति से लैस किया जा रहा है।

- राजनेताओं ने अपना नया धर्म गढ़ लिया है-किसी भी कीमत पर खुद की तरक्की। खुद की उन्नति में किसी भी तरीके से पैसा कमाना, बाहुबल जुटाना और सत्ता में बने रहना शामिल है
- राजनेता-प्रशासक नीतियों के निर्माण और उनके क्रियान्वयन के मामले में विफल साबित हो रहे हैं

स्थिति कुछ ऐसी है कि सत्ता में बैठे राजनेता-प्रशासक नीतियों के निर्माण और उनके क्रियान्वयन के मामले में विफल साबित हो रहे हैं। सत्ता के ऊँचे पायदान पर बैठे संकीर्ण विचार वाले राजनीतिक कर्ताधर्ताओं को यकीन है कि आगामी चुनाव में एक बार फिर वह वापसी करने में सफल रहेंगे। राजनीतिक पार्टियाँ राजनीति के धर्म यानी जनता के कल्याण का पालन करने में यकीन नहीं रखतीं। इसके बजाय राजनेताओं ने अपना नया धर्म गढ़ लिया है - किसी भी कीमत पर खुद की तरक्की। खुद की उन्नति में किसी भी तरीके से पैसा कमाना, बाहुबल जुटाना और सत्ता में बने रहना शामिल है और निजी लाभ अर्जित करने के अपने इस एजेंडे में वे अपनी अगली पीढ़ी को भी हिस्सेदार बना रहे हैं। दुर्भाग्य यह है कि परिवारवाद की यह प्रवृत्ति केवल राजनेताओं के अपने परिवार तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसका अन्य नाते-रिश्तेदारों तक विस्तार हो चुका है। कुल मिलाकर इस राजनीतिक अधर्म में लोकतांत्रिक व्यवस्था के ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करने के खतरनाक संकेत मिलते हैं।

चीन जैसे देशों में आर्थिक चमत्कारों से आम आदमी को यह सोचने का प्रोत्साहन मिल रहा है कि क्या भ्रष्टाचार, मनमानी और यहां तक कि मूल्यों के ह्रास जैसे दोषों से भरी शासन की वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था को आगे जारी रखना चाहिए?जिस तेजी से राजनीति और लोकतांत्रिक व्यवस्था का पतन हो रहा है उसी अनुपात में समाज में चिंतकों की भूमिका बढ़ रही है उन्हें खड़े होकर शासन की लोकतांत्रिक व्यवस्था के मूल्यों की रक्षा करनी चाहिए। इन लोगों को समाज की जरूरत के लिए अपने ज्ञान और शोध के आधार पर जोरदारी से आवाज उठानी चाहिए और लोकतंत्र की राजनीति के धर्म की पुनर्स्थापना करनी चाहिए। अब्राहम लिंकन और महात्मा गांधी ने यही किया था और इसीलिए वे बड़े बदलाव के वाहक बने। आपातकाल से पहले गिरती सेहत के बावजूद जयप्रकाश नारायण ने भी यही किया था। समाज राजनीति के धर्म अर्थात अधिकांश लोगों के कल्याण की राजनीति के धर्म की पुनर्स्थापना के लिए आदि गुरु की बाट जोह रहा है।

- जागरण से साभार

क्रांतिकारी वामपंथी चेतना के प्रतिनिधि कवि अदम गोंडवी

-विनय कुमार सिंह

फटे चिथड़ों से तन ढंके गुजरता हो जहां कोई,
समझ लेना वो पगडंडी अदम के गांव जाती है।

अदम गोंडवी का जन्म उत्तर प्रदेश के गोंडा जिला के आटा परसपुर गांव के गजरराज पुखा में 22 अक्टूबर, 1947 को हुआ था। उनके माता-पिता का दिया नाम रामनाथ सिंह था। यूं तो उपरोक्त पंक्ति अदम ने अपने गांव के परिचय के संदर्भ में लिखी- लेकिन वास्तव में भारत में रहने वाले विशाल बहुसंख्यक गरीब विवश ग्रामीणों की जीवन दशा को चित्रित किया है। अपने एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा था 'जब मैं पैदा हुआ तो देश को आजाद हुए दो ही महीने हुए थे, जरूर हर्ष-उल्लास का वातावरण रहा होगा लेकिन होश संभाला तो पाया कि इस हर्ष-उल्लास का कोई मतलब ही नहीं। शोषण और अत्याचार तो खत्म होने को ही नहीं आ रहे। जिस ग्रामीण परिवेश का मैं हिस्सा था, वहां तो बदहाली हीराज करती आ रही है।' अदम को ज्यादा औपचारिक शिक्षा नहीं मिली लेकिन प्राथमिक शिक्षा के दौरान ही यशपाल, प्रेमचंद, रांगेय राघव जैसे रचनाकारों को पढ़ डाला था। अपने गांव के स्कूल के पुस्तकालयों में जिस भी लेखकों की रचनाएं प्राप्त हुई, पढ़ता रहा। पढ़ने के क्रम में कई सवाल इनके जेहन में कुलबुलाने लगते थे। बाद में इन्हीं सवालों को उन्होंने अपने पाठकों व श्रोताओं से पूछना शुरू कर दिया।

मसलन, सौ में सत्तरआदमी जब देश में नाशाद है,
दिल पर रखकर हाथ कहिये देश ये आजाद है?

राहुल सांस्कृत्यायन की भांति वे भी धमक्कड़ी को शान और समझ का स्रोत मानते थे। वे एक किसान थे और किसान के लिए खेत ही उनका सब कुछ होता है। इस शौक के चलते ही उनके कुछ खेत भी बिके। उनके सर पर ढाई लाख रुपये बैंक का कर्जा था, जो उन्होंने घर-गृहस्थी चलाने के लिए ले रखा था। अपनी शान के विस्तार और समझ को गहराई देने की ललक में अपनी वर्गीय समझ और वैचारिकी को लोगों से मिलने-जुलने में उन्होंने कभी आड़े नहीं आने दिया। बगैर कोई समझौता किए और बगैर किसी पूर्वाग्रह से मथुरा सखी सम्प्रदाय, बाल्टी बाबा, बिनोवा भावे, अमृता प्रीतम, ओशो रजनीश जैसे लोगों से मिलने गए। वे रजनीश से मिले और उनके आश्रम का जायजा भी लिया -

'खुद पतंजलि क्रांति लेकर आ गए हैं योग में,
आत्मदर्शन कीजिए अब पाश्विक संभोग में।
जिस्म की घाटी में अब इलहाय ढूंढा जा रहा है,
ये घिनौनी लत है गोरे गांव के जगदीश की।
वासना की प्रक्रिया में प्यार बोगस चीज है,
जिस्म कच्चा माल है रजनीश के उद्योग में।

एक अन्य प्रसिद्ध आश्रम में विकृत यौनाचार देखकर विचलित हो गए और क्षोभ भरे शब्दों में लिखा -

'अध्यात्म जगत की उस घृणित परम्परा को क्या कहें, जहां औरतों को ही नहीं पुरुषों को भी महीने में पांच दिन केयर फ्री नैपकिन की जरूरत पड़ती है, देखता हूँ गंदे पानी की तरह तुम्हारी सभ्यता कितनी शीघ्र सड़ती है।

अदम आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन देश के अंदर कथित धर्माधिकारियों के काले कारनामे जिस प्रकार उजागर हो रहे है, उससे यह ज्ञात होता है वे कितने दूरदर्शी सोच के व्यक्ति थे, अदम गोंडवी पहली बार फरवरी 1981 में सार्वजनिक रूप से मंच पर आए। वहां उन्होंने अपना परिचय चुभते हुए सवाल के साथ दिया - 'ये खुद की लाश अपने कंधों पे उठाए, ऐ शहर के बाशिंदों हम गांव से आए हैं, सुर्खी है मेरे खूं की जिन लाल के फूलों में, उस तल्ख हकीकत को क्यूँ आप घुमाए हैं।

करीब तीन दशक पहले अदम गोंडवी ने अपनी एक लंबी कविता 'मैं चमारों की गली में ले चलूंगा आपको' के माध्यम से हिन्दी साहित्यिक परिदृश्य में प्रवेश किया था। लखनऊ के दैनिक 'अमृत प्रभात' के रविवारीय संस्करण में प्रकाशित होते ही यह नज्म व्यापक चर्चा का विषय बना। यह उत्तर प्रदेश में सामंती उत्पीड़न और आतंक की शिकार एक दलित युवती पर केन्द्रित थी जिसे कवि ने 'सरयूपार की मोनालिसा' कहकर संबोधित किया था। उस दलित युवती से सवर्ण जमींदारों के बलात्कार की सच्ची घटना पर आधारित इस कविता में इस घटना का प्रतिरोध करने वाले व्यक्ति की हत्या की कहानी कही गई थी। खास बात यह है कि उस समय हिन्दी पट्टी में दलित आंदोलन की सुगबुगाहट भी नहीं थी। इस कविता के कारण अदम गोंडवी को अपने जिला में जमींदारों और प्रशासन से धमकियां भी सहनी पड़ीं, लेकिन अदम जनता की कविता लिखने की अपनी राह से डिगे नहीं [illegible] पहला संग्रह 'धरती की सतह पर' नाम से प्रकाशित हुआ, तो वे एक प्रमुख जनकवि के रूप में प्रतिष्ठित हो गये। अदम ने हिन्दी में गजल विद्या को एक नया आयाम दिया और उसे दुष्यंत कुमार की बिंबवादी खायत से हटाकर ठोस राजनीति की ओर ले [illegible] अपने साक्षात्कार में उन्होंने कहा 'दुष्यंत से पहले गजल आशिक और माशूक के [illegible]च ही सिमटी रहती थी। दुष्यंत उसकी बेड़ियां तोड़कर नयी जमीन पर ले आये। ब[illegible] का औजार बनाया उसको। उन्हीं की परंपरा में कुछ अलग करना चाहता हूँ वैसे भ[illegible]नियत ने मुझे कभी प्रभावित नहीं किया' एक शेर देखें -

जो गजल माशूक के जल्वों से वाकिफ हो गई,
उसको अब बेवा के माथे की शिकन तक ले चलो।

आजादी के बाद गांवों की लगातार बढ़ती दुर्दशा को आवाज देने वाले अदम हिन्दी में अपने ढंग के अकेले कवि हैं उनका स्वर सीधा, तीखा, प्रहार करता और ललकारता हुआ है, उनके गांव की चौपाल में भूख ही मेजबान है। और उनके मुक्ति पाने का एक मात्र उपाय बगावत है।

'आप आयें तो कभी गांव के चौपाल में,
मैं रहूँ या न रहूँ भूख मेजबां होगी'।
या 'ये नई पीढ़ी पे आयद है वही जज्मेंट दे,
फलसफा गांधी का मौजूं है कि नक्सलवाद है।'

अदम की रचनाओं में तल्खी और आक्रोश है, एक किसान की तरह जो तमाम आपदाओं को झेलते हुए अपनी जमीन से प्यार करता है। उसकी तस्वीर बदलने में उसका यकीन कभी कमजोर नहीं पड़ता है और वह परिस्थितियों से हार नहीं मानता। अदम ने गैर बराबरी के खिलाफ अपने शब्दों को पैना बनाया। मजलूमों के पक्ष में अदब की जवाबदेही को अनिवार्य बताते हुए अपनी दिशा तय करते हुए कहा -

भूख के एहसास को शेरों सुखन तक ले चलो,
या अदम को मुफलिसों की अंजुमन तक ले चलो।

अदम की ये पंक्तियाँ उर्दू के शायद मजाज की याद दिलाती हैं अदम जिस इलाके के रहने वाले हैं, वह बाढ़ग्रस्त, गरीबी, अभावों से ग्रस्त हैं, भुखमरी बेरोजगारी के निशान कदम-कदम पर घाव जैसे नजर आते हैं वे भला इससे कैसे आंख मूंद सकते थे -

'जुल्फ-अंगड़ाई-तबस्सुम-चांद-आइना-गुलाब,
भुखमरी के मोर्चे पर ढल गया इनका शवाब।
पेट के भूगोल में उलझा हुआ है आदमी,
इस अहद में किसको फुर्सत है पढ़े दिल की किताब।
इस सर्दी की तिश्नगी का जख्म होंठों पर लिये,
बेयकीनी के सफर में जिंदगी है इक अजाब।

भुखमरी, गरीबी, सामंती और पुलिसिया दमन के साथ-साथ भारत में राजनीति के माफियाकरण पर उस दौर में सबसे मारक कविताएं उन्होंने लिखीं, उनकी अनेक पंक्तियां आम लोगों की जुबान पर है - 'काजू भुने प्लेट में, विस्की गिलास में, उतरा है रामराज विधायक निवास में पक्के समाजवादी हैं, तस्कर जहों या डकैत, इतना असरहै खादी के उजले लिबास में, बाबरी मस्जिद ध्वंस के 21 साल पूरे हो गये, अदम ने सांप्रदायिकता के उभार के अंधे और पागलपन भरे दौर में गजल के ढांचे में सवाल उठाने, बहस करने और समाज को इस प्रश्न पर समझ और विवेश को विकसित करने की कोशिश की -

'हिन्दू या मुस्लिम के एहसासात को मत छेड़िये,
अपनी कुर्सी के लिए जज्बात को मत छेड़िये।
हममें कोई हूण, कोई शक, कोई मंगोल है,
दफन है जो बात, अब उस बात को मत छेड़िये।
'गर गलतियां बाबर की थीं,
तो जुल्म का घर फिर क्यों जले।
ऐसे नाजुक वक्त में हालात को मत छेड़िये'
'छेड़िये इक जंग मिल-जुलकर गरीबी के खिलाफ,
दोस्त मेरे मजहबी नग्मात को मत छेड़िये।'

अदम व्यवस्था के दोषों के मुक्त भोगी थे, उनकी जीवन स्थिति अर्थव्यवस्था के निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति की हो गई थी। परेशानियों, बीमारियों और सामाजिक जिम्मेदारियों के निर्वाह में उनके खेत विकते गये और अब उनके पास कुछ ही जमीन बची थी। फिर भी वे हार नहीं माने वह झुके नहीं, किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया, सूर्य प्रसाद मिश्र ने जब उनके बिगड़ते स्वास्थ्य पर अखबार में लिखा तो जिलाधिकारी सजग हुए जिला अस्पताल में उन्हें भर्ती कराया गया। लेकिन हालत सुधरी नहीं, उन्हें पी. जी. आई. लखनऊ भेज दिया गया। पी. जी. आई. में अदम को भर्ती कराना भी टेढ़ी खीर साबित हुआ। बड़ी मुश्किल से उन्हें इमरजेंसी वार्ड में जगह मिली। कोई नौ घंटे तक वे दर्द से तड़पते रहे, फिर भी तत्काल राहत की भी शुरुआत नहीं हो सकी, जब सपा नेता मुलायम सिंह यादव के ओएसडी जगजीवन पचास हजार रुपये के साथ पीजीआई पहुंचे तब इलाज शुरू हुआ। यह मदद आने में थोड़ी देर होती तो अदम बिना इलाज के ही हमसे विदा हो गये होते। 12 दिसम्बर से 18 दिसम्बर 2011 तक वह जिंदगी और मौत से जूझते रहे 18 दिसम्बर, 2011 को प्रात: 5 बजे से इस दुनिया वे विदा हो गये। गोंडा के निकटतम कवि मित्रों व अन्य साथियों ने उन्हें बचाने के लिए कुछ नहीं किया। और अंत उनकी ही पंक्ति से -

हमने अदब से हाथ उठाया सलाम को,
समझा उन्होंने इससे है खतरा निजाम को।

- युवा संवाद से साभार, सम्पर्क -9570638908

www.thearyasamaj.org

ब्राह्मणवाद के विरुद्ध अभियान
दक्षिण भारत के मन्दिरों में दलित पुजारियों की नियुक्ति

केरल प्रान्त में जब से ब्राह्मण जाति के बच्चों ने पुजारियों के बजाय अन्य व्यवसायों/पेशों में जाना शुरू किया है, तब से मन्दिर प्रबन्धन संगठनों के समक्ष पुजारियों की कमी की समस्या उत्पन्न हो गई है। इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए मन्दिर प्रबन्धकों ने इस कमी को दूर करने के लिए एक क्रान्तिकारी कदम उठाते हुए निर्णय लिया है कि जो कोई भी (ब्राह्मणों के अलावा किसी भी जाति का व्यक्ति) "धार्मिक कर्मकाण्ड" को पुरोहित जीवन के रूप में अपना पेशा बनाना चाहते हैं उनका स्वागत है।

ब्राह्मण समाज में मन्दिर पुजारियों की बढ़ती कमी के कारण केरल में कई गैर– ब्राह्मण समाजों ने अपने स्वयं के 'पुजारी प्रशिक्षण कार्यक्रम' बनाये हैं। यह परम्परा में एक क्रांतिकारी बदलाव है। मन्दिरों के स्वामी और प्रबन्धकों द्वारा इन स्नातकों को मन्दिरों में सेवा के लिए ठेके पर लिया जा रहा है।

हाल में नायर सर्विस सोसायटी जो 40 लाख की संख्या वाला समाज है, और जिसके केरल प्रान्त भर में एक हजार (1000) मन्दिर हैं ने एक ऐसे प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की है। संस्था ने 2010 में श्री पद्मनाभ एन.एस.एस. तन्त्र विद्यापीठ की *शुरूआत की थी। यह पूर्णकालिक* दो वर्ष का अध्ययन–जिसमें 18 महीने की पढ़ाई और 6 माह का मन्दिर में कार्य अनुभव का प्रशिक्षण दिया जाता है।

इसके पाठ्यक्रम में मन्दिर में पूजा, हवन, योग, वास्तुकला, ज्योतिष एवं हिन्दू–दर्शन के विषय शामिल हैं। प्रार्थी का शाकाहारी एवं उच्चतर माध्यमिक श्रेणी पास होना आवश्यक है। उनके राशिफल, चरित्र एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि को गहराई से जांचा जाता हैं। जैसा कि केन्द्र के निदेशक अरूण भास्कर का कहना है : यह एक ऐसा पेशा है जिसमें आध्यात्मिकता, पवित्रता तथा अच्छे चरित्र की जरूरत है। पारम्परिक प्रथा का अनुसरण करते हुए शिक्षार्थियों के लिए निःशुल्क शिक्षा, आवास एवं भोजन की व्यवस्था रहती है। प्रशिक्षण पूरा होने पर छात्रों को प्रमाण–पत्र दिया जाता है। पिछले वर्ष प्रथम बैच ने स्नातक डिग्री प्राप्त की। भास्कर जी ने बताया कि सभी को नायर सर्विस सोसायटी मन्दिरों में पुजारियों के बतौर नौकरी दी गई। नायर सर्विस सोसायटी के महामंत्री श्री जी0 सुकुमारन नय्यर ने बताया कि स्कूल को उच्च जाति के पुजारियों की ओर से भारी विरोध का सामना करना पड़ा, क्योंकि यह लोग पुजारी प्रथा को अपना एकाधिकार मानते हैं, जबकि उनकी वर्तमान पीढ़ी अन्य पेशों में जा रही है। श्री नय्यर का कहना है कि ऊँची जाति के पुजारी लालची हो गये हैं और वे मात्र कुछ धनवान मन्दिरों में ही कार्य करना पसन्द करते हैं। छोटे मन्दिरों (जिनकी संख्या कुल संख्या के 90प्रतिशत से अधिक है) में काम करना नहीं चाहते। श्री नय्यर ने बताया कि हम लम्बे समय से प्रशिक्षित पुजारियों की अत्यधिक कमी का अनुभव कर रहे थे। आखिर में हमने अपना स्वयं का प्रशिक्षण केन्द्र खोलने का निर्णय लिया। कभी नहीं के बदले देरी से ही सही।

गैर–ब्राह्मण 'इझवा समाज' ने इस कदम का स्वागत किया है। पूरी एक शताब्दी पूर्व इस समाज ने शिवगिरि में श्री नारायण गुरू की देखरेख में ब्रह्मविद्या गुरूकुलम् खोला था। एक दूसरा विद्यालय तन्त्रविद्या गुरूकुलम् के नाम से कई दशाब्दियों पूर्व कोनूथूकूनू में खोला गया। डा0 कारूमाथरा विजयन तान्त्री, जो एक सम्मानित संस्कृत विद्वान्, मन्दिर संस्कृति के एक्सपर्ट हैं और 400 मन्दिरों के मुख्य पुजारी हैं, के नेतृत्व में इन विद्यालयों को अधिक ख्याति मिली है। छात्रों को श्री विद्या उपासना सम्प्रदाय के तहत प्रशिक्षित किया जाता है। इन दो स्कूलों में शिक्षा प्राप्त स्नातक 90 लाख की संख्या वाले समाज के मन्दिरों में सेवारत हैं। डा0 विजयन ने बताया कि सप्ताहांत में यहां ट्रेनिंग दी जाती है, ताकि विद्यार्थी सप्ताह में कालेजों में पढ़ाई कर सकें। पांच वर्ष के पाठ्यक्रम में छात्रों को संस्कृत, कर्मकाण्ड, उनके गुरूओं का इतिहास एवं हिन्दू धर्म की शिक्षा दी जाती है। प्रशिक्षण पूरा करने पर छात्रों को प्रमाण–पत्र दिये जाते हैं जो उन्हें किसी भी मन्दिर में मुख्य पुजारी के रूप में देव पूजा के लिए कार्य करने में सक्षम बनाता है।

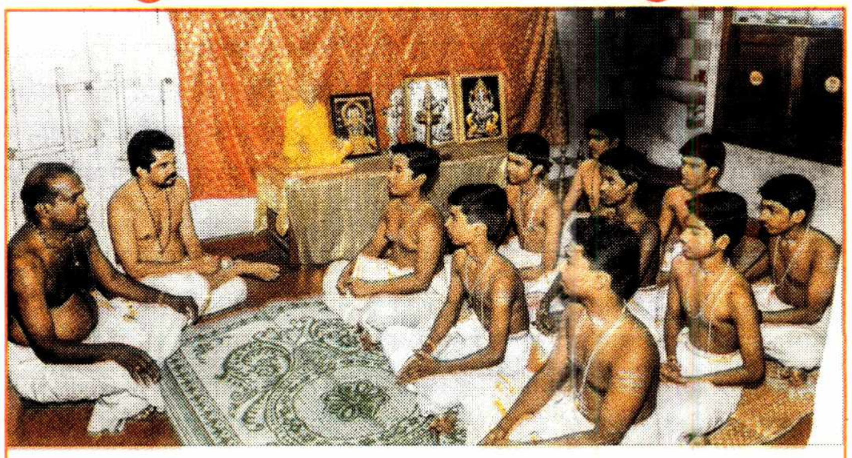

Adopting the vocation Students of the Thantravidhya Gurukulam at Paravur, under the leadership of Rakesh Thantri (second from left).

डा0 विजयन ने बताया कि उनके कार्यकाल में एक सौ (100) छात्रों ने स्नातक की उपाधि ली, जो अब भली भांति मन्दिरों में सेवारत् हैं।

केरल के ब्राह्मणों, जिनमें नम्बूदरी, नम्बूदरीपाद, एमब्रह्मतिरी, एंवं अन्य कुछ उपजातियों ने एतराज करते हुए कई संख्या में कोर्ट केस डाले। सुप्रीम कोर्ट ने 2002 में दिये गये एक निर्णय में यह निश्चित किया कि नय्यर और इझवा समाजों का यह अधिकार है कि वे अपने मन्दिरों में गैर–ब्राह्मण पुजारियों की नियुक्ति कर सकते हैं तथा राज्य सरकार के नियंत्रण वाले देवास्थानम् बोर्डों में भी गैर–ब्राह्मण पुजारी काम कर सकते हैं।

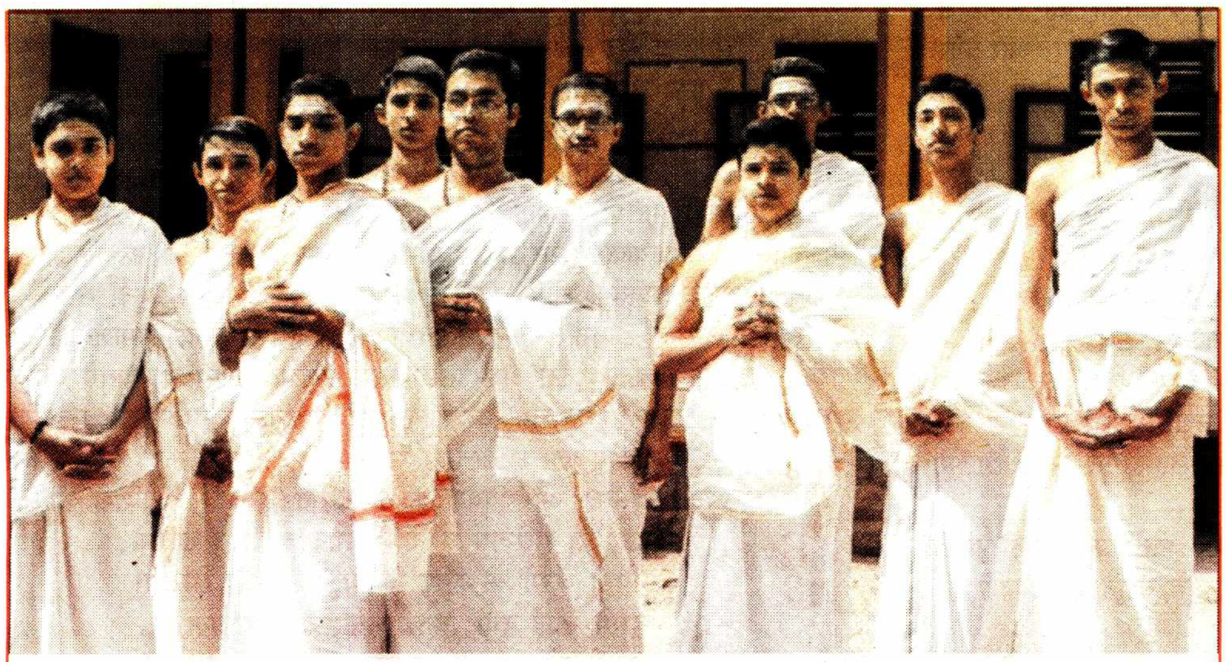

New priests from the Nair Service Society_s Sri Padmanabha

पुजारियों की कमी का मुख्य कारण है कि ब्राह्मणों की वर्तमान पीढ़ी के युवक कई कारणों से अपने इस पुश्तैनी काम में रूचि नहीं ले रहे। ब्राह्मण युवा दिनचर्या की शिकायत करते हैं, जैसे प्रातः जल्दी नहाना और प्रतिदिन घंटों मन्दिर सेवा कार्य। दूसरे, वे मन्दिर परिसर में रहना भी पसन्द नहीं करते, जबकि मुख्य पुजारी के लिए यह आवश्यक है कि उसे कुछ मन्दिर परिसरों में एक वर्ष से तीन वर्ष तक रहना अनिवार्य है, यथा 'शबरीमाला' में एक वर्ष और इतूमानूर महादेवा मन्दिर' में तीन वर्ष निवास। शबरीमाला हिल टेम्पल के मुख्य पुजारी ब्रह्मचारी राजीवेरू ने बताया कि मुख्य बात यह है कि केरल समाज में हिन्दू पुरोहितों को सम्मानित स्थान प्राप्त नहीं है। वेतन भी बहुत कम है। बोर्ड अधिकारियों का कहना है कि वेतन अच्छा है, क्योंकि पुजारियों को भक्तों के यहां कर्मकाण्ड करने पर "दक्षिणा" मिलती है। वास्तव में राजीवेरू इसका प्रतिवाद करते हुए कहते हैं कि देवास्थानम् बोर्ड के अधीन अधिकांश 2500 मन्दिरों में धन की कमी के कारण प्रतिदिन पूजा नहीं होती। कुछ भक्त छोटे मन्दिरों में जाते हैं जो पर्याप्त "दक्षिणा" नहीं देते। एक पुजारी मामूली वेतन पर परिवार नहीं पाल सकता।

ब्राह्मण समाज दुःखी मन से इस समस्या से अवगत है। इस प्रकार का जीवन पुजारी परिवार की लड़कियां पसन्द नहीं करती। ब्राह्मण समाज ने स्वीकार किया है कि आज कल लड़कियां शिक्षित हैं एवं रोजगार कर रही हैं। श्री शंकर नारायणन नाम्बूतीरि जो ब्राह्मण हैं और जो एक बैंक में कार्यरत हैं का कहना है कि एक पुजारी के लिए दुल्हन ढूंढ़ना कठिन हो गया है। उसकी पुत्री का विवाह चेन्नई के एक व्यापारी के साथ हुआ है, जबकि उनका पुत्र एक अन्तरराष्ट्रीय एयर लाईन्स में बतौर केबिनक्रू काम करता है। केरल में ब्राह्मण समाज की संख्या कम है और शादियां केवल अपनी उपजातियों में ही हो सकती है, पसन्द सीमित है। कोई युवा ऐसे पेशे को पसन्द नहीं करता जहां उसकी पसन्द सीमित हो और वह जहां न सम्मान पाता हो और न ही अच्छा वेतन।

अन्त में, राज्य के आधुनिक पाश्चात्य समाज में अधिकांश ब्राह्मण युवक पुजारी के पेशे को आदिम युग का मानते हैं। वे अन्य जाति व धर्म के अपने समकक्षों जैसा जीवन पसन्द करते हैं। इसके विपरीत, नय्यर और इझवा समाज के लड़के आर्थिक दृष्टि से कमजोर समाज से आते हैं। उनमें धार्मिक प्रवृत्ति की ओर झुकाव रखने वाले पुजारी के काम को एक अच्छा अवसर मानते हैं।

इससे पूर्व 1969 में नय्यर एवं इझवा युवकों को पुजारी के तौर पर प्रशिक्षित करने का ट्रावनकोर देवास्थानम् बोर्ड का प्रयास सफल नहीं हुआ था। बोर्ड के पूर्व सहायक कमिश्नर एम.आर. जगनमोहन दास ने बताया कि भक्तों ने इन पुजारियों से मन्दिर का प्रसाद लेने से मना कर दिया था। इसके परिणाम स्वरूप अनेकों को इस काम से हटाकर बोर्ड कार्यालयों में लिपिक की सेवा दी गई। जगनमोहन दास ने बताया कि अब लोगों की मानसिकता उस समय से बहुत बदल चुकी है। अब उन्होंने आशा जताई है कि इस आध्यात्मिक जीवन एवं पवित्र पेशे की सफलता इसमें आने वाले अन्य जातियों के लोगों की श्रद्धा एवं लगन पर निर्भर करती है, जो इसे अपनाना चाहते है।

–हिन्दूइज्म टूडे से साभार।

हिन्दी अनुवाद : प्रो. श्योताज सिंह

पाठकों के पत्र तथा प्रतिक्रिया

वैदिक सार्वदेशिक का 19 से 25 दिसम्बर, 2013 का अंक मेरे सामने है। इस अंक में "अरबों की बर्बादी करोड़ो सोते भूखे" लेख पढ़कर अन्दर तक सिहरन पैदा हो गई। जिस देश में करोड़ों लोग दो जून की भूख भी शान्त नहीं कर पा रहे दो वहाँ कुछ प्रतिशत लोग मौज मार रहे हैं। यह देश का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा। आखिर हमारे नेताओं की दृष्टि इस ओर कब पड़ेगी। भोजन बर्बादी की सच्चाई मनुष्यता को झकझोर देने वाली है।

- अनुज शर्मा, किशन पोल बाजार, जयपुर

वैदिक सार्वदेशिक के 19 से 25 दिसम्बर, 2013 के अंक में "हम गोहन्ता नहीं गो-रक्षक बनें", "अरबों की बर्बादी करोड़ों सोते भूखे" तथा "दवा कम्पनियों की धांधलेबाजी" लेख विचारणीय है। पूरा ही अंक पठनीय एवं संग्रहणीय है। वैदिक सार्वदेशिक धार्मिक पाखण्ड तथा सामाजिक बुराइयों एवं उनके निराकरण का रास्ता दिखाकर समाज को मार्ग दर्शन प्रदान कर रहा है। ऐसी पत्रिका के सम्पादन के लिए धन्यवाद।

- राम कृपाल ठाकुर, उन्नाव (उ. प्र.)

www.thearyasamaj.org

Why Go Veg?

- Manu Singh

People are drawn to vegetarianism by all sorts of motives. Some of us want to live longer, healthier lives or do our part to reduce pollution. Others have made the switch because we want to preserve Earth"s natural resources or because we"ve always loved animals and are ethically opposed to eating them.

Thanks to an abundance of scientific research that demonstrates the health and environmental benefits of a plant-based diet, even the federal government recommends that we consume most of our calories from grain products, vegetables and fruits. And no wonder: An estimated 70 percent of all diseases, including one-third of all cancers, are related to diet. A vegetarian diet reduces the risk for chronic degenerative diseases such as obesity, coronary artery disease, high blood pressure, diabetes and certain types of cancer including colon, breast, prostate, stomach, lung and esophageal cancer.

Why go veg? Chew on these reasons:

Manu Singh

You'll ward off disease. Vegetarian diets are more healthful than the average American diet, particularly in preventing, treating or reversing heart disease and reducing the risk of cancer. A low-fat vegetarian diet is the single most effective way to stop the progression of coronary artery disease or prevent it entirely. Cardiovascular disease kills 1 million Americans annually and is the leading cause of death in the United States. But the mortality rate for cardiovascular disease is lower in vegetarians than in nonvegetarians, says Joel Fuhrman, MD, author ofEat to Live: The Revolutionary Formula for Fast and Sustained Weight Loss. A vegetarian diet is inherently healthful because vegetarians consume less animal fat and cholesterol (vegans consume no animal fat or cholesterol) and instead consume more fiber and more antioxidant-rich produce——another great reason to listen to Mom and eat your veggies!

You'll keep your weight down. The standard American diet—high in saturated fats and processed foods and low in plant-based foods and complex carbohydrates——is making us fat and killing us slowly. According to the Centers for Disease Control and Prevention (CDC) and a division of the CDC, the National Center for Health Statistics, 64 percent of adults and 15 percent of children aged 6 to 19 are overweight and are at risk of weight-related ailments including heart disease, stroke and diabetes. A study conducted from 1986 to 1992 by Dean Ornish, MD, president and director of the Preventive Medicine Research Institute in Sausalito, California, found that overweight people who followed a low-fat, vegetarian diet lost an average of 24 pounds in the first year and kept off that weight 5 years later. They lost the weight without counting calories or carbs and without measuring portions or feeling hungry.

You'll live longer. If you switch from the standard American diet to a vegetarian diet, you can add about 13 healthy years to your life, says Michael

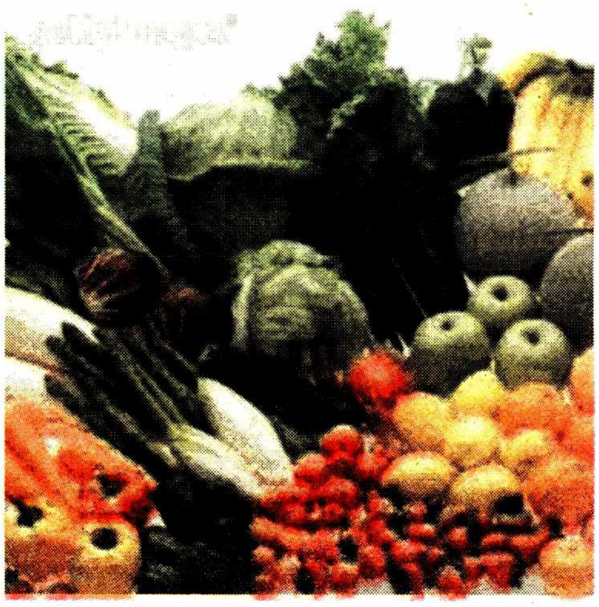

F. Roizen, MD, author of The RealAge Diet: Make Yourself Younger with What You Eat. "People who consume saturated, four-legged fat have a shorter life span and more disability at the end of their lives. Animal products clog your arteries, zap your energy and slow down your immune system. Meat eaters also experience accelerated cognitive and sexual dysfunction at a younger age."

Want more proof of longevity? Residents of Okinawa, Japan, have the longest life expectancy of any Japanese and likely the longest life expectancy of anyone in the world, according to a 30-year study of more than 600 Okinawan centenarians. Their secret: a low-calorie diet of unrefined complex carbohydrates, fiber-rich fruits and vegetables, and soy.

You'll build strong bones. When there isn't enough calcium in the bloodstream, our bodies will leach it from existing bone. The metabolic result is that our skeletons will become porous and lose strength over time. Most health care practitioners recommend that we increase our intake of calcium the way nature intended——through foods. Foods also supply other nutrients such as phosphorus, magnesium and vitamin D that are necessary for the body to absorb and use calcium.

People who are mildly lactose-intolerant can often enjoy small amounts of dairy products such as yogurt, cheese and lactose-free milk. But if you avoid dairy altogether, you can still get a healthful dose of calcium from dry beans, tofu, soymilk and dark green vegetables such as broccoli, kale, collards and turnip greens.

You'll reduce your risk of food-borne illnesses. The CDC reports that food-borne illnesses of all kinds account for 76 million illnesses a year, resulting in 325,000 hospitalizations and

अगले पृष्ठ पर जारी है

5,000 deaths in the United States. According to the US Food and Drug Administration (FDA), foods rich in protein such as meat, poultry, fish and seafood are frequently involved in food-borne illness outbreaks.

You'll ease the symptoms of menopause. Many foods contain nutrients beneficial to perimenopausal and menopausal women. Certain foods are rich in phytoestrogens, the plant-based chemical compounds that mimic the behavior of estrogen. Since phytoestrogens can increase and decrease estrogen and progesterone levels, maintaining a balance of them in your diet helps ensure a more comfortable passage through menopause. Soy is by far the most abundant natural source of phytoestrogens, but these compounds also can be found in hundreds of other foods such as apples, beets, cherries, dates, garlic, olives, plums, raspberries, squash and yams. Because menopause is also associated with weight gain and a slowed metabolism, a low-fat, high-fiber vegetarian diet can help ward off extra pounds.

You'll have more energy. Good nutrition generates more usable energy——energy to keep pace with the kids, tackle that home improvement project or have better sex more often, Michael F. Roizen, MD, says in The RealAge Diet. Too much fat in your bloodstream means that arteries won't open properly and that your muscles won't get enough oxygen. The result? You feel zapped. Balanced vegetarian diets are naturally free of cholesterol-laden, artery-clogging animal products that physically slow us down and keep us hitting the snooze button morning after morning. And because whole grains, legumes, fruits and vegetables are so high in complex carbohydrates, they supply the body with plenty of energizing fuel.

You'll be more 'regular.'• Eating a lot of vegetables necessarily means consuming more fiber, which pushes waste out of the body. Meat contains no fiber. People who eat lower on the food chain tend to have fewer instances of constipation, hemorrhoids and diverticulitis.

You'll help reduce pollution. Some people become vegetarians after realizing the devastation that the meat industry is having on the environment. According to the US Environmental Protection Agency (EPA), chemical and animal waste runoff from factory farms is responsible for more than 173,000 miles of polluted rivers and streams. Runoff from farmlands is one of the greatest threats to water quality today. Agricultural activities that cause pollution include confined animal facilities, plowing, pesticide spraying, irrigation, fertilizing and harvesting.

You'll avoid toxic chemicals. The EPA estimates that nearly 95 percent of the pesticide residue in the typical American diet comes from meat, fish and dairy products. Fish, in particular, contain carcinogens (PCBs, DDT) and heavy metals (mercury, arsenic, lead, cadmium) that can't be removed through cooking or freezing. Meat and dairy products can also be laced with steroids and hormones, so be sure to read the labels on the dairy products you purchase.

You'll help reduce famine. About 70 percent of all grain produced in the United States is fed to animals raised for slaughter. The 7 billion livestock animals in the United States consume five times as much grain as is consumed directly by the American population. "If all the grain currently fed to livestock were consumed directly by people, the number of people who could be fed would be nearly 800 million," says David Pimentel, professor of ecology at Cornell University. If the grain were exported, it would boost the US trade balance by $80 billion a year.

You'll spare animals. Many vegetarians give up meat because of their concern for animals. Ten billion animals are slaughtered for human consumption each year. And, unlike the farms of yesteryear where animals roamed freely, today most animals are factory farmed: —crammed into cages where they can barely move and fed a diet tainted with pesticides and antibiotics. These animals spend their entire lives in crates or stalls so small that they can't even turn around. Farmed animals are not protected from cruelty under the law——in fact, the majority of state anticruelty laws specifically exempt farm animals from basic humane protection.

You'll save money. Meat accounts for 10 percent of Americans" food spending. Eating vegetables, grains and fruits in place of the 200 pounds of beef, chicken and fish each nonvegetarian eats annually would cut individual food bills by an average of $4,000 a year.

Your dinner plate will be full of color. Disease-fighting phytochemicals give fruits and vegetables their rich, varied hues. They come in two main classes: carotenoids and anthocyanins. All rich yellow and orange fruits and vegetables——carrots, oranges, sweet potatoes, mangoes, pumpkins, corn—owe their color to carotenoids. Leafy green vegetables also are rich in carotenoids but get their green color from chlorophyll. Red, blue and purple fruits and vegetables——plums, cherries, red bell peppers——contain anthocyanins. Cooking by color is a good way to ensure you're eating a variety of naturally occurring substances that boost immunity and prevent a range of illnesses.

It's a breeze. It's almost effortless these days to find great-tasting and good-for-you vegetarian foods, whether you're strolling the aisles of your local supermarket or walking down the street at lunchtime. If you need inspiration in the kitchen, look no further than the internet, your favorite bookseller or your local vegetarian society's newsletter for culinary tips and great recipes. And if you're eating out, almost any ethnic restaurant will offer vegetarian selections. In a hurry? Most fast food and fast casual restaurants now include healthful and inventive salads, sandwiches and entrees on their menus. So rather than asking yourself why go vegetarian, the real question is: Why haven't you gone vegetarian?

7, Jantar-Mantar Road, New Delhi-1
E-mail : tomanuji@gmail.com

महापुरुषों की दृष्टि में गायत्री मंत्र की महत्ता

अर्थ सहित चिन्तन मनन करने से होता है लाभ

ओ३म् भूर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य,
धीमहि धियो योः नः प्रचोदयात्।

गायत्री के जप के सम्बन्ध में महानपुरुषों के अनुभव -

महात्मा आनन्द स्वामी जी के जीवन की घटना है कि "बचपन में पढ़ाई में उनका मन नहीं लगता था। निराशा और हताशा का जीवन था। परिवार, सगे सम्बन्धी, स्कूल के अध्यापक कोई उनसे प्रसन्न नहीं रहता था। अपनी इस समस्या को स्वामी नित्यानन्द जी के सम्मुख रखा। स्वामी जी ने गायत्री जप, अर्थ सहित, प्रातः सायं जपने की प्रेरणा दी। बालक खुशहाल चन्द ने ऐसा ही किया। परिणाम स्वरूप कक्षा में अच्छे नम्बर आने लगे। पढ़ाई में मन लगने लगा। कार्यालय में मुखिया बना दिया गया। धन, ऐश्वर्य, यश, कीर्ति, गोधन, घोड़े, मोटरें, सेवा-भावी पत्नी, सुयोग्य सन्तानें असाधारण सफलता प्राप्त हुई। संन्यास के बाद आनन्द स्वामी जी इस नाम से उन्होंने वैदिक धर्म और आर्य समाज एवं स्वामी दयानन्द जी के मन्तव्यों को आगे बढ़ाया।"

स्वामी विरजानन्द जी के जीवन की घटना -

जगत् गुरु स्वामी दयानन्द जी के गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी, जिनका बचपन का नाम वृजलाल था, बचपन में ही माता-पिता का साया सिर से उठ गया था। परिवार में बड़े भाई-भाभी अच्छा व्यवहार नहीं करते थे। चेचक के कारण बचपन में ही नेत्र ज्योति चली गई थी। तिरस्कृत होकर घर छोड़ना पड़ा। एक महात्मा ने गायत्री का जप, ध्यान करने की प्रेरणा दी। स्वामी जी घण्टों ऋषिकेश में गंगा के पवित्र तट पर गायत्री का जाप किया करते थे। परिणाम स्वरूप ज्ञान के नेत्र खुल गये। व्याकरण के सूर्य कहलाये। स्वामी दयानन्द जी जैसे आंखों वाले व्यक्ति को, अपनी वैदिक शिक्षा से, संसार का महामानव, समाज सुधारक, वैदिक ज्ञान का आचार्य बना दिया।"

स्वामी विवेकानन्द जी का कथन - "गायत्री सद्बुद्धि का मन्त्र है और परमात्मा से मांगने योग्य वस्तु सद्बुद्धि ही है। सद्बुद्धि से सन्मार्ग मिलता है और सत्कर्म होते हैं तब सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है।"

लोकमान्य बाल गंगाधर जी कहते हैं - 'कुमार्ग को छोड़कर श्रेष्ठमार्ग पर चलने की प्रेरणा गायत्री मन्त्र में विद्यमान है। इसी से सत्-असत् का विवेक होता है। इसी से आत्मा को प्रकाश प्राप्त होता है।"

महात्मा गाँधी जी कहते हैं - "गायत्री मन्त्र का स्थिर चित्त और शान्त हृदय से किया हुआ जप आपत्ति काल के संकटों को दूर करने का प्रभाव रखता है। और आत्मोन्नति के लिए उपयोगी है।"

मानव मात्र को गायत्री जप का उपदेश - इस प्रकार गायत्री मन्त्र की मानव-समाज के लिए महती उपयोगिता है। इसमें ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना भक्ति के तीनों अंग विद्यमान हैं।

अतः गायत्री मन्त्र के जप का अधिकार, स्त्री-पुरुष, आबाल-वृद्ध, छोटे-बड़े, ऊँच-नीच सभी वर्ग के लिए है। सभी को भक्ति पूर्वक गायत्री मन्त्र का पाठ करना चाहिए जिससे व्यक्ति का आत्म कल्याण सम्भव है।

- संकलन - प्रो. श्योताज सिंह, महामंत्री बंधुआ मुक्ति मोर्चा

www.thearyasamaj.org
पृष्ठ-3 का शेष

मानव तस्करी के जख्म

होता है उन्हें कुछ समय तक मानव तस्कर दूर-दराज के किसी इलाके में रखते हैं और जब वह थोड़ी बड़ी हो जाती है तो फिर उसे मुम्बई भेज दिया जाता है। मायानगरी में इन लड़कियों को पब से लेकर डांस बार तक में खपाया जाता है। कई लड़कियां ऐसी भी होती हैं जिन्हें देह व्यापार की राह पर चलने के लिए धकेल दिया जाता है। देह व्यापार के लिए बड़े पैमाने पर लड़कियों को मध्य पूर्व के देशों में भी भेज दिया जाता है। इन देशों में लड़कियों को भेजने के बदले में मानव तस्करों को अच्छे-खासे पैसे मिल जाते हैं। इस रिपोर्ट की मानें तो हर रोज 10 से 12 महिलाओं को मध्य पूर्व के देशों में भेजा जा रहा है। कई लड़कियों को तो जबरन इन देशों में भेजा जा रहा है। वहीं कई मामले ऐसे भी आए हैं जिनमें लड़कियों को मध्य पूर्व के देशों में अच्छी नौकरी और अभिनय का झांसा दिया गया है। तस्करी करके लाई गई महिलाओं का देश से बाहर भेजा जाना कई स्तर पर प्रशासनिक नाकामी को दिखाता है।

वहीं दूसरी तरफ देश के कई राज्यों में लिंगानुपात लगातार नीचे आ रहा है। हरियाणा और पंजाब इनमें प्रमुख हैं। पंजाब में एक हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 893 है। हरियाणा की हालत तो और बुरी है। दिल्ली से सटे इस राज्य में एक हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 877 है। इस वजह से हरियाणा में एक अलग तरह का संकट पैदा हो गया है। यहां के लड़कों को शादी के लिए दुल्हन नहीं मिल रही हैं ऐसे में यहां मानव तस्करों की सक्रियता बढ़ रही है। दिल्ली में प्लेसमेंट एजेंसी की आड़ में मानव तस्करी के घिनौने खेल में लगे तस्कर हरियाणा में महिलाओं की कम संख्या का फायदा उठाकर देश के दूसरे हिस्सों से तस्करी करके लाई गई महिलाओं को यहां बेच रहे हैं। इन महिलाओं से सामाजिक तौर पर तो कहने के लिए शादी हो जाती है लेकिन खरीदी गई महिलाओं से किस तरह का बर्ताव होगा, इसका अंदाज लगाना मुश्किल नहीं है। रिपोर्ट में हरियाणा के 10,000 परिवारों के अध्ययन के आधार पर यह नतीजा निकाला गया है कि इन परिवारों में 9,000 लोगों की दुल्हन हरियाणा से बाहर की हैं। जिन राज्यों से लड़कियों को लाकर यहां शादियां कराई जा रही हैं उनमें असम, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, बिहार और ओड़िशा प्रमुख हैं।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि 2009-11 के दौरान 1.77 लाख बच्चों की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज की गई। यह आंकड़ा किसी को भी चौंका सकता है कि इनमें से 55,470 बच्चों के बारे में अब तक कोई सुराग नहीं मिल पाया। जिन बच्चों के बारे में अब तक कुछ पता नहीं चला उनमें लड़कियों की संख्या 35,615 है। इसका मतलब यह हुआ कि गुम हो रहे बच्चों में 64 फीसद लड़कियाँ है। इसी रिपोर्ट में राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो के एक और आंकड़े का हवाला दिया गया है। इसमें यह बताया गया है कि 2009 से 2011 के बीच देश भर में 1.59 लाख महिलाएं लापता हुई। इनमें से 55,950 का अब तक पता नहीं चला है। यह आंकड़े यह समझने का पर्याप्त आधार देते हैं कि गुम हो रहे बच्चों और महिलाओं की तस्करी हो रही है। जब भी मानव तस्करी या गुम हो रहे बच्चों से सम्बन्धित कोई सवाल खड़ा होता है तो सरकार की ओर से यह भरोसा दिलाया जाता है कि जरूरी कदम उठाए जायेंगे, लेकिन हर बार नतीजा ढाक के तीन पात वाला ही होता है। सरकारी बयानबाजियों के बीच फिर से किसी अंतरराष्ट्रीय एजेंसी की रिपोर्ट आ जाती है जिससे देश को शर्मसार होना पड़ता है।

इस मसले पर जरूरी ध्यान नहीं दिया जाना सामाजिक और राजनीतिक संवेदनशून्यता को दिखाता है। आखिर बच्चो को देश का भविष्य कहते हुए लोग अघाते नहीं है तो ऐसे में इनके हक और हित की चिंता करना भी सत्ता और व्यवस्था की जिम्मेदारी है। यह मानने में किसी को कोई एतराज नहीं होना चाहिए कि सत्ता और व्यवस्था इस जिम्मेदारी को निभाने में नाकाम रही है। हालात की बदहाली का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि गुम होने वाले बच्चों में ज्यादातर के बारे में कोई जानकारी नहीं मिल पाती। यानी एक बार अगर कोई मासूम अपनी मां की ममता की आंचल से ओझल हुआ तो फिर वह ताजिंदगी इससे वंचित ही रह जाता है।

अब वक्त आ गया है कि सरकार बयानबाजी से ऊपर उठकर इस मामले में कुछ परिणामकारी कदम उठाए। कहने को राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग बना हुआ है लेकिन हकीकत यह है कि बच्चों के शोषण के मामलों में कोई कमी नहीं आ रही है। देश में एक ऐसा कानून है जो बाल मजदूरी को प्रतिबंधित करता है। लेकिन इस तथ्य से हर कोई वाकिफ है कि आज भी घरेलू मजदूर के तौर पर सबसे अधिक इस्तेमाल बाल मजदूरों का ही होता है। कहने को देश में 14 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा का कानून भी है लेकिन न सिर्फ संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी की इस रिपोर्ट ने, बल्कि और भी कई रिपोर्टों ने विस्तार से बताया है कि बड़ी संख्या में 14 साल से कम उम्र के बच्चों को कई तरह की यातनाओं का शिकार होना पड़ रहा है। कानूनों का सही क्रियान्वयन अगर हो तो निश्चित तौर पर मानव तस्करों का हौसला टूटेगा बल्कि देश के भविष्य कहे जाने वाले बच्चो को भी एक अच्छा भविष्य मिलेगा और तब कहीं जाकर देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की उन बातों में यकीन जग पायेगा जिनमें वे बच्चों को 'देश का भविष्य' बताते हैं।

देश में बढ़ती मानव तस्करी के लिए देश की एजेंसियों के बीच तालमेल का अभाव भी एक अहम वजह है। अगर मानव तस्करी की समस्या से निपटना है तो विभिन्न सरकारी एजेंसियों में बेहतर समन्वय स्थापित करना होगा। ऐसा किए बगैर मानव तस्करी के खिलाफ प्रभावी ढंग से लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती। ●

- जनसत्ता से साभार

अध्ययन में बताया गया है कि देश की राजधानी दिल्ली मानव तस्करी की भी 'राजधानी' बन गई है। दिल्ली, मानव तस्करी के सबसे बड़ी मंडी के रूप में उभरी है। आज यहां न सिर्फ भारत के अलग-अलग हिस्सों से तस्करी करके लाए गए बच्चों और महिलाओं की खरीद-फरोख्त होती है बल्कि नेपाल और बांग्लादेश से लाए गए बच्चों और महिलाओं को भी खरीदा और बेचा जा रहा हैं तस्करी करके लाए गए बच्चों और महिलाओं का बड़े पैमाने पर देह व्यापार में इस्तेमाल हो रहा है। ब्यूटी पार्लर से लेकर मसाज पार्लर और फ्रेंडशिप क्लब तक की आड़ में तस्करी करके लाई गई महिलाओं और बच्चों से देह व्यापार कराया जा रहा है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मानव तस्करी और इससे सम्बन्धित अन्य धंधे सिर्फ राष्ट्रीय राजधानी में ही नहीं चल रहे बल्कि अब इनका जाल आस-पास के शहरों में भी फैल गया है।

आर्य समाज, सैक्टर-6, भिलाई का 54वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, सैक्टर-6, भिलाई का त्रि-दिवसीय 54वाँ वार्षिकोत्सव एवं अथर्ववेद महायज्ञ का कार्यक्रम 20, 21 एवं 22 दिसम्बर, 2013 को सम्पन्न हुआ। इसकी पूर्व संध्या पर एक भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम सियान सदन, नेहरू नगर में भी आयोजित किया गया।

भारत के ख्याति प्राप्त विद्वानों ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इनमें गुरुकुल आमसेना के संस्थापक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, बिजनौर, उत्तर प्रदेश के भजनोपदेशक पं. योगेश दत्त जी, रोहतक हरियाणा से आचार्य सत्यव्रत जी एवं छत्तीसगढ़ से आचार्य अंशुदेव जी प्रमुख हैं।

कार्यक्रम का उद्घाटन 20 दिसम्बर, 2013 को झण्डा फहराकर किया गया। रोज प्रातः यज्ञ, भजन व प्रवचन एवं सायं को भजन व प्रवचन का कार्यक्रम हुआ प्रथम दिवस पर दोपहर को शालेय छात्राओं के लिए विशेष भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। द्वितीय दिवस पर यज्ञ के दौरान बालकों का उपनयन संस्कार भी कराया गया। अंतिम दिन यज्ञ की पूर्णाहुति दी गई। गुरुकुल आश्रम आमसेना से आए ब्रह्मचारियों द्वारा योग व व्यायाम प्रदर्शन किया गया, इनमें लाठी व भाला चालन, तीरंदाजी, तलवारबाजी प्रमुख थे। गले व आंख से लोहे का सरिया मोड़ना देख जन समुदाय स्तब्ध रह गया। योगासन द्वारा विभिन्न आकृतियों का प्रदर्शन किया गया जिसे जनता ने खूब सराहा।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री रवि आर्य एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री अवनी भूषण पुरंग, प्रधान द्वारा किया गया।

- रवि आर्य, मंत्री, आर्य समाज, सैक्टर-6, भिलाई नगर (छत्तीसगढ़)

अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल का
फांसी की कोठरी से भारत की जनता के नाम संदेश

पं. राम प्रसाद बिस्मिल अशफ़ाक उल्ला ख़ाँ

मैं इस समय इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि यदि हम लोगों ने प्राणपण से जनता को शिक्षित बनाने में पूर्ण प्रयत्न किया होता, तो हमारा उद्योग क्रान्तिकारी आन्दोलन से कहीं अधिक लाभदायक होता, जिसका परिणाम स्थायी होता, अति उत्तम होगा यदि भारत की भावी सन्तान तथा नव–युवक वृन्द क्रान्तिकारी संगठन करने की अपेक्षा जनता की प्रवृत्ति को देश सेवा की ओर लगाने का प्रयत्न करें और श्रमजीवी तथा कृषकों का संगठन करके उनको जमीदारों तथा रईसों के अत्याचारों से बचाएं।

भारतवर्ष के रईस तथा जमींदार सरकार के पक्षपाती है। मध्य श्रेणी के लोग किसी न किसी प्रकार इन्हीं तीनों के आश्रित हैं। कोई नौकरपेशा है और जो कोई व्यवसाय भी करते हैं उन्हें भी इन्हीं के मुंह की ओर ताकना पडता है। रह गये श्रमजीवी तथा कृषक सो उनको उदरपूर्ति के उद्योग से ही समय नहीं मिलता, जो धर्म, समाज तथा राजनीति की ओर कुछ ध्यान दे सकें। मद्यपानादि दुर्व्यसनों के कारण उनका आचरण भी ठीक नहीं रह सकता। व्यभिचार, सन्तान वृद्धि, अल्पायु में मृत्यु तथा अनेक प्रकार के रोगों से जीवन भर उनकी मुक्ति नहीं हो सकती। क भाकों में उद्योग का तो नाम भी नहीं पाया जाता। यदि एक किसान को जमीदार की मजदूरी करने या हल चलाने की नौकरी करने पर ग्राम में आज से बीस वर्ष पूर्व दो आने रोज या चार रूपये मासिक मिलते थे, तो आज भी वही वेतन बंधा चला आ रहा है।

बीस वर्ष पूर्व अकेला था, अब उसकी स्त्री तथा चार सन्तान भी हैं पर उसी वेतन में उसे निर्वाह करना पडता है। उसे उसी पर सन्तोष करना पडता है। सारे दिन जेठ की लू तथा धूप में गन्नें के खते में पानी देते देते उसको रतौन्धी आने लगती है। अंधेरा होते ही आंख से दिखाई नहीं देता, पर उसके बदले में आधा सेर सड़े हुए शीरे का शरबत या आधा सेर चना तथा छः पैसे रोज मजदूरी मिलती है, जिसमें ही उसे अपने परिवार का पेट पालना पडता है।

जिसके हृदय में भारतवर्ष की सेवा के भाव उपस्थित हों या जो भारतभूमि को स्वतंत्र देखने या स्वाधीन बनाने की इच्छा रखता हो, उसे उचित है कि ग्रामीण संगठन करके कृषकों की दशा सुधार कर उनके हृदय से भाग्य निर्माता को हटा कर उद्योगी बनने की शिक्षा दे। कल कारखाने, रेलवे, जहाज तथा खानों में जहां कहीं श्रमजीवी हों, उनको अपनी अवस्था का ज्ञान हो सके और कारखानों के मालिक मनमाने अत्याचार न कर सकें और अछूतों को, जिनकी संख्या इस देश में लगभग छः करोड़ हैं पर्याप्त शिक्षा प्राप्त कराने का प्रबन्ध हो तथा उनको सामाजिक अधिकारों में समानता मिले

जिस देश में छः करोड़ मनुष्य अछूत समझे जाते हों, उस देश के वासियों को स्वाधीन बनानें का अधिकार ही क्या है?इसी के साथ ही साथ स्त्रियों की दशा भी इतनी सुधारी जाए कि वे अपने आपको मनुष्य जाति का अंग समझने लगे। वे पैर की जूती तथा घर की गुड़िया न समझी जाएं। इतने कार्य हो जाने के बाद जब भारत की जनता अधिकांश शिक्षित हो जाएंगी, वे उसके दबाने में समर्थ न हो सकेगी। रूस में जब तक किसान संगठन नहीं हुआ, रूस सरकार की ओर से देश सेवकों पर मनमाने अत्याचार होते रहे।

जिस समय से केथेराइन ने ग्रामीण संगठन का कार्य अपने हाथ में लिया, स्थान–स्थान पर कृषक सुधाकर संघों की स्थापना की, घूम घूम कर रूस के युवक तथा युवतियों ने जारशाही के विरूद्ध प्रचार आरम्भ किया, तभी से किसानों को अपनी वास्तविक अवस्था का ज्ञान होने लगा और वे अपने मित्र तथा शत्रु को समझने लगे, उसी समय से जारशाही की नींव हिलने लगी। श्रमजीवियों के संघ भी स्थापित हुए। रूस में हडतालों का आरम्भ हुआ। उसी समय से जनता की प्रवृत्ति को देखकर मदान्धों के नेत्र खुल गए।

भारतवर्ष में सबसे बडी कमी यही है कि इस देश के युवकों में शहरी जीवन व्यतीत करने की बान पड गई है। युवक वृन्द साफ सुथरे कपड़े पहनने, पक्की सडकों पर चलने, मीठा, खट्टा तथा चटपटा भोजन करने विदेशी सामग्री से सुसज्जित बाजारों में घूमने, मेज कुर्सी पर बैठने तथा विलासिता में फंसे रहने के आदी हो गए हैं।

ग्रामीण जीवन को वे नितान्त नीरस तथा शुल्क समझते हैं। उनकी समझ में ग्रामों में अर्धसभ्य या जंगली लोग निवास करते हैं। यदि कभी किसी अंग्रेजी स्कूल या कॉलेज में पढने वाला विद्यार्थी किसी कार्यवश अपने किसी संबंधी के यहां ग्राम में पहुंच जाता है, तो उसे वहां दो चार दिन काटना बडा कठिन हो जाता है। या तो कोई उपन्यास साथ ले जाता है। जिसे अलग बैठे पढ़ा करता है, या पेड पेड सोया करता है।

किसी ग्रामवासी से बातचीत करने से उनका दिमाग थक जाता है, या उससे बातचीत करना वह अपनी शान के खिलाफ समझता है। ग्रामवासी जमींदार या रईस जो अपने लडकों को अंग्रेजी पढाते हैं, उनकी भी यही इच्छा रहती है कि जिस प्रकार हो सके उनके लडके कोई सरकारी नौकरी पा जाएं। ग्रामीण बालक जिस समय शहर में पहुंचकर शहरी शान को देखते हैं, इतनी बुरी तरह से उन पर फैशन का भूत सवार हो जाता है कि उनके मुकाबले फैशन बनाने की चिन्ता किसी को भी नही। थोड़े दिनों में उनके आचरण पर भी इसका प्रभाव पडता है और वे स्कूल के गन्दे लड़कों के हाथ में पड़कर बूडी बुरी–बुरी कुटेवों में फंस जाते है। उससे जीवन पर्यन्त अपना ही सुधार नहीं हो पाता। फिर वे ग्रामवासियों का सुधार क्या खाक कर सकेंगे?

– आर्यनीति से साभार

।। ओ३म्।।

आर्य पर्वों की सूची

विक्रमी सम्वत् 2070–71 तदनुसार सन् 2014 ई0

क्र.सं.	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	सम्वत्	अंग्रेजी तिथि	दिवस
1.	मकर संक्रान्ति	पौष सुदी-14	2070	14-01-2014	मंगलवार
2.	वसन्त पंचमी	माघ सुदी-5	2070	4-02-2014	मंगलवार
3.	सीताष्टमी	फाल्गुन बदी-8	2070	23-02-2014	रविवार
4.	महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	फाल्गुन बदी-10	2070	24-02-2014	सोमवार
5.	ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि)	फाल्गुन बदी-13	2070	27-02-2014	गुरुवार
6.	लेखराम तृतीया	फाल्गुन सुदी-3	2070	03-03-2014	सोमवार
7.	मिलन पर्व/नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन सुदी-15	2070	16-03-2014	रविवार
		चैत्र बदी-1		17-03-2014	सोमवार
8.	आर्यसमाज स्थापना दिवस (नव-सम्वत्सर)	चैत्र सुदी-1	2071	31-03-2014	सोमवार
9.	रामनवमी	चैत्र सुदी-9	2071	08-04-2014	मंगलवार
10.	वैशाखी	चैत्र सुदी-13	2071	13-04-2014	रविवार
11.	हरि तृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण सुदी-3	2071	30-07-2014	बुधवार
12.	वेद प्रचार सप्ताह { श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन)	श्रावण सुदी-15	2071	10-08-2014	रविवार
13.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद बदी-8	2071	17-08-2014	रविवार
14.	विजयदशमी/दशहरा	आश्विन सुदी-10	2071	04-10-2014	शनिवार
15.	गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन सुदी-11	2071	05-10-2014	रविवार
16.	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली)	कार्तिक बदी-15	2071	23-10-2014	गुरुवार
17.	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष सुदी-2	2071	23-12-2014	मंगलवार

विशेष टिप्पणी : 1. आर्यसमाजें एवं आर्य जन इन पर्वों को उत्साहपूर्वक मनाएं।
2. देशी तिथियों में घट बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

प्रो. विट्ठलराव आर्य
मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, (निकट रामलीला मैदान), नई दिल्ली-2,
दूरभाष : 23274771, 23260985

दिव्यं महाकाव्यम् 'वेद:'

- श्री हरि अरविन्द: साहित्य प्राध्यापक: श्री रमाशंकरसाङ्गवेदविद्यापीठस्य, कोडरा, बस्ती (उ. प्र.)

अथ संस्कृत काव्यानां महाकाव्यानां नाटकादीनां तदन्तर्वर्तिविषयाणां वा गंभीरविचारणप्रसङ्गे तेषां मूलस्त्रोत: प्रति चित्ताकर्षणं हि स्वभावतो जायत एव कस्यापि सहृदयस्य। अनवद्यानि विश्वप्रसिद्धानि सरस-मधुर-मधुनिष्यन्द-परिस्पन्द -सुन्दरणि सुकुमार मतिभिरपि सानन्दं समास्वादनीयानि कालिदासादिमहा कवीनामाकल्पस्थायि यशोराशिपुंजीभूतानिव विश्वमखिलमुज्वलयन्ति काव्यरत्नानि, यान्यद्य वयं मधु नास्वादित पूर्वमिव, पुष्पमनाघ्रातपूर्वमिव, अनाविद्धं रत्नमिव च लब्ध्वा स्वकीयं सर्वस्वं मन्यामहे, अधीमहे, परमप्रेम्णा चाध्यापयाम:।

तान्येतानि महाकाव्यानि कं ज्ञानराशिं, कां परम्परां, कां विचार-सरणिं चोपजीवन्ति?एतेषां जीवातुभूतं किमपि तादृशं वस्तु विद्यते न वेति विचारणायां क्रियमाणायां सत्यामस्माकं पुरस्तात् समुन्मिषन्ति कानिचन भव्यानि भास्वरतररत्नानि निरन्तर तप: संलग्नतया निर्मलशेमुषीसम्पन्नां पूर्वेषां महर्षीणां सदयहृदयहिमवत: सम्प्राप्त प्रसराणि भागीरथी सलिल प्रवाह समानि विश्ववसुन्धरा पावन कारणानि समुज्ज्वल प्रकाशविभासिताशेष भूमण्डलानि वेदनामधेयानि स्त्रोतांसि।

सोऽयमविद्यान्धकार पटलोत्पाटन पटीयान् दिव्यतम: प्रकाशो वेदनामधेय:। विश्वज्ञान प्रकाशानामादिमूलभूतोऽयं स्वमहिम्नैव भूमण्डले 'भगवान् वेद' इत्याम्नायते। ज्योतिषां ज्योतिर्हि सकल ब्रह्माण्ड मण्डले मण्डलेश्वरो भगवान्। तस्य साक्षात्स्वरूपभूतत्वात् तेन स्वयं कृतत्वाद्वा वेदोऽपि ज्ञानप्रकाशराशिर्भगवानेवेति वेदज्ञा: विद्वांस: विश्वसन्ति। प्राणिमात्रस्य योगक्षेमावबोधनाय परमेश्वरो महर्षिहृदयेषु वेदमन्त्रान् समुन्मीलयति यथावस्थान-प्रतिकल्पम्। वेदप्रकाशविधुरं तु सकलमपि जगत् तमोमयमेव सम्भवेत्। शब्दाह्वयं ज्योतिरिति वेदमेव सङ्केतयति नूनमाचार्यदण्डिमहोदय:। यथा -

इदमन्धं तम: कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।

एष सकलाऽज्ञानान्धकार- संहारकारी भगवान् वेदो हि सर्वविधज्ञानविज्ञानप्रकाशन: परमानन्दसन्दोहप्रदायि भव्यतम। दिव्यं महाकाव्यम्।

वेद-मन्त्रेषु वेदरूपस्यास्य दिव्यमहाकाव्यस्य काव्यत्वमजरामरत्वं च सबलं प्रतिपाद्यते -

'अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति।
वेदस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।।'

न हि तावद् वेद एव केवलं महाकाव्यानामादि महाकाव्यम्, अपितु वेद रचयिता महाकवि: परमेश्वरोऽपि कवीनामादिकवि:, मनीषिणामादिमनीषी चापि -

कविर्मनीषी परिभू: स्वयम्भू:,
याथातथ्यतोऽर्थान् व्यादधाच्छाश्वतीभ्य: समाभ्य:।।

सर्वगुणान्वितं महाकाव्यं सर्वज्ञ एव महाकविर्निर्मातुं प्रभवति नान्य: कश्चिदल्पज्ञ:, इति प्रतिपादयन्नाह तत्र भवानाचार्यशङ्कर:। यथा -

महत: ऋग्वेदादे: शास्त्रस्यानेकविद्या स्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवत् सर्वार्थावद्योतिन: सर्वज्ञकल्पस्य योनि: कारणं ब्रह्मस्य न हीदृशस्य शास्त्रस्य ऋग्वेदादिलक्षणस्य सर्वज्ञगुणान्वितस्य सर्वज्ञादन्यत: सम्भवोऽस्ति।।

अखिलस्यापि भूमण्डलस्य प्रथमा संस्कृतिर्वेदरूपा। सा हि सर्वेरपि जगती निवासिभिर्जनैर्वरणीया -

'सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा।'

समस्तानां विज्ञानानां, सकलानां ज्ञानानाम्, अशेषाणां शास्त्राणां, विश्वासां भाषाणां, काव्य महाकाव्य पुराण दर्शनादीनां सर्वविधसाहित्य प्रपंचानाम् आदिमस्त्रोतस्त्वेन विभासमानं दिव्यमेतन्महाकाव्यं सर्वेषामपि किलाऽर्षलौकिकादिमहाकाव्यानामाधारभूतम्, उपजीव्यतमोत्सस्वरूपं चापि।

अस्मिन् दिव्यमहाकाव्ये धर्म:, संस्कृति:, दर्शनं, ज्ञानं, विज्ञानम्, इतिहास:, ज्योतिषम्, गणितम्, भूगोलप्रभृतय:, साहित्यादयो निखिला अपि विषया: वर्ण्यविषयभूता: विराजन्ते। सर्वविधविशयाणां महानाकरो हि वेदराशिरिति स्वामिदयानन्द मैक्समूलर प्रभृतयो वेदविदो वदन्ति, वेदस्य सर्वज्ञानमयं स्वरूपं ते स्वीकुर्वन्ति।

- भारतोदय से साभार

वैदिक शोध संगोष्ठी एवं वार्षिकोत्सव

निमन्त्रण पत्र

विषय : वैदिक वांङ्मय में भूगोल

आपको यह सूचित करते हुए महती प्रसन्नता हो रही है कि पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला, मेरठ (उ. प्र.) में पौष शुक्ल त्रयोदशी, वि. सं. 2070 सोमवार, तदनुसार दिनांक 13 जनवरी, 2014 को प्रात: 10 बजे वेदों के मर्मज्ञ विद्वान पूज्य स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी के स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में ''वैदिक वाङ्मय में भूगोल' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय शोध संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत करने एवं चर्चा में भाग लेने हेतु आप सादर आमन्त्रित हैं। विद्वज्जनों से निवेदन है कि अपना शोधलेख ***walkman-chanakya-901*** फांट में टंकित कर ***pavamani1986@gmail.com*** पर ई-मेल करें तथा टंकित एक प्रति अपने साथ लाने का कष्ट करें। आप द्वारा शोधगोष्ठी में प्रस्तुत सभी स्तरीय लेख त्रैमासिक शोध पत्रिका 'पावमानी' में प्रकाशित किये जाते हैं। विस्तृत जानकारी के लिए गुरुकुल में मो.:-09758747920 नम्बर पर सम्पर्क करें।

आशा है विद्वज्जन वैदिक ज्ञान-विज्ञान एवं संस्कृति सभ्यता के प्रसार हेतु आयोजित इस गोष्ठी को सफल करने में सहयोग प्रदान करेंगे।

दिनांक 14 जनवरी, 2014, मंगलवार को मकर सौर संक्रांति के पावन पर्व पर गुरुकुल का वार्षिकोत्सव अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है, जहां अनेक प्रतिष्ठित विद्वानों के प्रवचन तथा भजनोपदेशकों के भजनोपदेश होंगे। दिनांक 9 जनवरी, 2014 से आरम्भ 'अथर्ववेद पारायण यज्ञ' की पूर्णाहुति तथा नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न होगा तथा ब्रह्मचारियों के व्याख्यान एवं बल प्रदर्शन आदि आकर्षक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये जायेंगे। आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, कुलाधिपति, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी भोला झाल, मेरठ (उ. प्र.)

अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल व अशफाक उल्ला खां की पुण्यतिथि मनाई

कोटा 19 दिसम्बर आर्य समाज रामपुरा द्वारा संचालित मातृसेवा सदन बालिका प्राथमिक विद्यालय एवं बाल भारतीय आर्य शिशुशाला में संयुक्त रूप से अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल व अशफाक उल्ला खां को आज कार्यक्रम में श्रद्धांजलि दी गई। आर्य समाज रामपुरा कोटा के मन्त्री एवं विद्यालय के व्यवस्थापक डी. पी. मिश्रा ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए बताया कि विद्यालय की प्रार्थना के पश्चात् प्रार्थना स्थल पर सैकड़ों छात्र छात्राओं को सम्बोधित करते हुए आर्य परिवार संस्था के मन्त्री श्री इन्द्र कुमारसक्सेना ने कहा कि आज के दिन दोनों क्रांतिकारी देश के लिए हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर झूल गए। बिस्मिल और अशफाक उल्ला खां का देश की आजादी में बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। काकोरी काण्ड की घटना में इन दोनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। अंतिम बार मुलाकात करने आए बाबा राघव दास ने उन्हें दाढ़ी बनाता देखकर कहा बिस्मिल आज तुम्हारी फांसी है और तुम हजामत बना रहे हो?इस पर वह हंसकर बोले जब कोई यात्रा पर जाता है तो बन संवर के जाता है और मैं तो महायात्रा पर जा रहा हूँ, ऐसे थे हमारे बलिदानी देशभक्त। इस अवसर पर आर्य समाज भीमगंज मण्डी के पूर्व मन्त्री श्री राजेन्द्र आर्य, श्री प्रेमनाथ कौशल, श्री रघुवर सिंह कुशवाहा, श्री सुरेश चन्द्र दीक्षित, श्री विजय तोषनीवाल, श्री घॉसीलाल जी वर्मा, श्री राजेन्द्र सक्सेना, श्री पी. सी. मित्तल ने भी अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन से सम्बन्धित कुछ रोचक संस्मरण सुनाए। कार्यक्रम के अन्त में व्यवस्थापक डी. पी. मिश्रा ने ''हमें तो उन शहीदों की कहानी याद आती है चढ़ा दी भेंट में उठती जवानी याद आती है। लड़ी थी गोरों के संग में कमर से बांध कर बच्चा बहादुर वीर झांसी की रानी याद आती है। क्या जलियावाला बाग की घटना यह भारत भूल पायेगा करी थी जालिम डायर ने शैतानी याद आती है गुरु गोविन्द के बच्चे दीवारों में चुने देखो चन्द्रशेखर, भगतसिंह की कुर्बानी याद आती है कविता सुनाई जिसकी श्रोताओं ने खूब सराहना की। शांति पाठ के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- डी. पी. मिश्रा

www.thearyasamaj.org

सार्वदेशिक 9 से 15 जनवरी, 2014
प्रकाशन की तिथि : 9 जनवरी, 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

AMITY UNIVERSITY

A RESEARCH & INNOVATION DRIVEN UNIVERSITY GRADE 'A' ACCREDITED BY NAAC

INDIA'S #1 RANKED NON-PROFIT PVT. UNIVERSITY WITH SUCH ACHIEVEMENTS

- **520** patents filed by faculty in the last years
- **52,000** campus placements in the last years
- **700** case-studies developed by faculty in the last years
- **250** diverse programmes in over 50 disciplines
- **25,000** students on scholarship
- **80** global universities as Research Partners
- **Nobel Laureate** as Hony. professor
- **100,000** students in the Amity Education Group across 15 Indian and 8 sister global campuses
- **1,000** acres of campuses in the group

AMITY UNIVERSITY HAS CAMPUSES IN

NEW DELHI NCR

GURGAON

LUCKNOW

JAIPUR

GWALIOR

AMITY UNIVERSITY **OFFERS** OVER 250 UG/PG PROGRAMMES **IN 50 DISCIPLINES:**

Actuarial Sciences Agriculture | Anthropology | Applied Sciences | Architecture | Banking & Insurance | Biotech. | Commerce Communication | Computer Science/IT | Design | Economics | Education | Engineering | English Literature | Environment | Fashion Finance | Fine | Arts | Food Technology | Forensic Science | Geographic Information System & Remote Sensing | Green Technology | Herbal Research & Studies | Medical & Allied Sciences | Microbial Technology | Nanotechnology | Natural Resources & Sustainable Development | NGO Management | Nuclear Science & Technology | Nursing | Optometry | Performing Arts | Pharmacy | Physical Education | Physiology | Physiotherapy | Post Haivest Tech. & Cold Chain Mgmt. | Psychology & Behavioural Science | Public Health | Real Estate & Urban Infrastmcture | Rural Mgmt. | Sanskrit Studies | SocialScience| Soiar&Alternate Eneigy |Space Sciences |Telecom | Travel&Tourism | Virology&Irnmunobgy | Wildlife Sciences

(For detailed list of programmes, visit www.amity.edu)

MAC acredited awaded to Amity University Noida & Lucknow Campuses

Amity also has campuses:
In India: Ahmedabad, Bangalore, Bhubaneswar, Chandigarh, Chennai, Hyderabad, Indore, Kochi, Kolkata, Mumbai, Noida, Patna & Pune (visit www.agbs.in)
Abroad: London, Dubai, Singapure, New York, California, Mauritius, China & Romania (visit www.amity.edu/global)

Amity University, Sec.-125, Noida (New Delhi NCR) | Amity Helpline: 0120-2445252, 0120-4713600 | www.amity.edu
Amity University, Gurgaon Campus | Amity Helpline: 0124-3225651, 0124-2337016 | www.amity.edu/gurgaon
Amity University, Lucknow: www.amity.edu/lucknow | Amity University Rajasthan, Jaipur: www.amity.edu/jaipur | Amity University Madhya Pradesh, Gwalior: www.amity.edu/gwalior

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।